SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सत्यमेव जयते

कावेरी

अंक 30 वर्ष- 2024

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय

कर्नाटक विशेषांक

कावेरी

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग

सत्यमेव जयते

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय

कर्नाटक, बेंगलूरु-560 001

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

उद्देश्य

पत्रिका का मूल उद्देश्य है राजभाषा प्रयोग का संवर्धन साथ ही साथ हिंदी प्रयोग संबंधी आशंकाओं का निवारण एवं कार्यालयीन कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करना।

पत्रिका में प्रस्तुत विचार लेखकों के व्यक्तिगत विचार हैं।

टिप्पणियाँ हिंदी में लिखिए।
मसौदे हिंदी में तैयार कीजिए।
शब्दों में अटकिए नहीं।
अशुद्धियों से घबराइए नहीं।
अभ्यास अविलंब आरंभ कीजिए।

प्रकाशन
कावेरी हिंदी गृह पत्रिका

प्रकाशक
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय, कर्नाटक, बेंगलूरु

अंक-30

उद्देश्य
राजभाषा का संवर्धन एवं कार्यालयीन कामकाज में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करना ।

मूल्य
राजभाषा के प्रति निष्ठा

पत्रिका की साज-सज्जा
मनीषा विश्वकर्मा
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

मुख्य संरक्षक
स्मिता गोपाल
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

संरक्षक
के. विघ्नेश्वरन
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
शिवप्रिया बी.
वरिष्ठ लेखाधिकारी (मा.सं.वि.)

संपादक
उदय प्रताप सिंह
सहायक निदेशक (राजभाषा)

सह संपादक
निशा कुमारी
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

दीपा शर्मा
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

मनीषा विश्वकर्मा
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

प्रीति
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

अनुक्रमणिका

क्रम सं॰	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	संदेश: महालेखाकार (ले. व ह.)	6
2.	संदेश: वरिष्ठ उप महालेखाकर (प्रशासन)	7
3.	शुभकामनाएँ: वरिष्ठ लेखाधिकारी	8
4.	संपादकीय	9
5.	आपके पत्र	10
6.	कर्नाटक के लोक नृत्य - सुश्री निशा कुमारी	11
7.	कर्नाटक के प्रसिद्ध मंदिर	14
8.	राजभाषा कार्यान्वयन समिति बैठक	17
9.	कर्नाटक: भोजन एवं परिधान - सुश्री मनीषा विश्वकर्मा	18
10.	पेरिस ओलंपिक में भारतीय एथलीटों का प्रदर्शन - श्रीमती आर जयम्मा	20
11.	भारत की 'गार्डन सिटी' बेंगलूरु - सुश्री प्रीति	23
12.	कर्नाटक में अध्ययन	25
13.	शैक्षणिक संस्थानों की एक झलक	27
14.	कश्मीर-एक जन्नत - श्री एस एन शंकर	28
15.	कन्नड़ भाषा - सुश्री प्रीति	28
16.	गणतंत्र दिवस 2024	30
17.	कर्नाटक की महिमा - सुश्री मनीषा विश्वकर्मा	33
18.	जिंदगी - श्री चंद्र मणी आज़ाद	34
19.	मैं हूँ... - श्री श्रीरंगराजन	35
20.	खुद ही लड़ना होगा - श्री हिमांशु पटेल	36
21.	स्वतंत्रता दिवस 2024	37
22.	गलती - सुश्री शिखा गोएनका	38
23.	राजभाषा वार्षिक कार्यक्रम	39
24.	राजभाषा संबंधी प्रमुख आयाम	41
25.	मानक हिंदी वर्णमाला - श्री उदय प्रताप सिंह	43
26.	कार्यालय में आयोजित मेडिकल कैम्प	46
27.	सेवानिवृत्त अधिकारी	47
28.	लेखा और लेखापरीक्षा संबंधी शब्दावली	48
29.	कार्यालय में प्रयुक्त होने वाले सामान्य वाक्यांश	49
30.	पदाधिकारियों की रचनात्मकता	50
31.	हॉकी मैसूर इन्विटेशन कप-2024 पुरुष हॉकी टूर्नामेंट	51
32.	श्रद्धांजलि	52
33.	कर्नाटक राज्य पर प्रश्नोत्तरी	53
34.	संदर्भ सूची	54
35.	देखो हँस न देना	55
		56

संदेश

कार्यालयीन हिंदी पत्रिका ‘कावेरी’ का 30वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करने में मुझे हर्ष का अनुभव हो रहा है। राजभाषा अधिनियमों के प्रावधानों का अनुसरण करना हमारा कर्तव्य है। यह पत्रिका राजभाषा हिंदी की प्रगति के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। यह कार्यालय के कार्मिकों की रचनात्मकता और राजभाषा के प्रति उनके प्रेम को दर्शाती है। 30वें संस्करण को विशेष बनाने के लिए हमारे संपादक मंडल ने कर्नाटक से संबंधित कुछ विषयों जैसे लोक नृत्य, प्रसिद्ध मंदिर, भोजन, परिधान एवं भाषा आदि पर लेख शामिल करने का प्रयास किया है। जिससे यह अंक बहुत रोचक और ज्ञानवर्धक बन गया है। पत्रिका में शामिल रचनाएँ न केवल ज्ञानवर्धक है, बल्कि इससे यह भी पता चलता है कि कार्यालय के कर्मचारियों ने कितने उत्साह के साथ पत्रिका में अपना योगदान दिया है।

मैं आशा करती हूँ कि ‘कावेरी’ पत्रिका इसी प्रकार प्रगति पथ पर अग्रसर होती रहेगी। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल एवं सभी रचनाकारों को शुभकामनाएँ।

स्मिता गोपाल

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

संदेश

राजभाषा हिंदी के प्रचार- प्रसार के लिए समर्पित कार्यालयीन हिंदी पत्रिका 'कावेरी' का 30वां अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका राजभाषा के प्रचार-प्रसार में एक महत्वपूर्ण स्तंभ है। पत्रिका में प्रकाशित राजभाषा हिंदी से संबंधित जानकारी पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। यह अंक कर्नाटक राज्य की समृद्ध विरासत और संस्कृति पर केंद्रित है। मुझे आशा है कि पाठकों को पत्रिका में दी गई कर्नाटक राज्य राज्य के बारे में जानकारी ज्ञानवर्धक लगेगी।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल की सराहना करता हूँ और आशा करता हूँ कि भविष्य में भी कावेरी पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रहेगी।

शुभकामनाओं सहित!

के. विघ्नेश्वरन

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

संदेश

कार्यालयीन हिंदी गृह पत्रिका “कावेरी” के 30वें अंक के प्रकाशन पर आप सभी को शुभकामनाएँ। पत्रिका का नवीनतम अंक आप सभी को समर्पित करते हुए मुझे अत्यंत गर्व की अनुभूति हो रही है। हिंदी हमारी राजभाषा है। हिंदी भाषा में विचारों को अभिव्यक्त करना सहज एवं सरल है। हिंदी भाषा हमारे देश को एकता के सूत्र में पिरोये हुए है। राजभाषा हिंदी को कार्यालयीन कामकाज में बढ़ावा देना हम सबका संवैधानिक कर्तव्य है। सभी अधिकारियों व कर्मचारियों से अनुरोध है कि वे कार्यालयीन कामकाज में अधिक से अधिक हिंदी भाषा का प्रयोग करें।

इस आशा के साथ पत्रिका की सफलता व स्वर्णिम भविष्य की कामना करते हुए मैं सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ देती हूँ।

शिवाप्रिया बी.
वरिष्ठ लेखाधिकारी (मा.सं.वि.)

संपादकीय

कर्नाटक विशेषांक के रूप में प्रकाशित कार्यालीन हिंदी गृह पत्रिका 'कावेरी' का यह 30वाँ अंक है। इस अंक में कर्नाटक की संस्कृति के विविध रूपों का मनोरम वर्णन किया गया है। प्रस्तुत अंक में जहाँ एक तरफ कर्नाटक की सांस्कृतिक विविधता के दर्शन होते हैं वहीं दूसरी तरफ राजभाषा हिंदी से संबंधित नियमों और अधिनियमों का विस्तृत वर्णन दिया गया है। संघ की राजभाषा के माध्यम से कर्नाटक की सांस्कृतिक विविधता का चित्रण इस अंक को अनूठा बनाता है। ये अंक संस्कृति और भाषा का अनूठा संगम है।

आज हिंदी को संघ की राजभाषा बने 75 वर्ष पूरे हो चुके हैं। राजभाषा हिंदी इस वर्ष अपनी हीरक जयंती मना रही है। यह हीरक जयंती राजभाषा हिंदी की अस्मिता के कई आयामों को रेखांकित करती है। इसके साथ ही यह जयंती राजभाषा हिंदी का वास्तविक रूप, स्थिति, नाम और पहचान के लिए उसके 75 वर्षों के निरंतर संघर्ष को भी दर्शाती है। इन वर्षों में राजभाषा हिंदी की यात्रा में कई पड़ाव आए किन्तु हिंदी निरंतर प्रगति पथ पर आगे बढ़ती रही। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तेजी से उभरते हुए हिंदी ने दुनिया का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है और विश्व पटल पर अपनी एक नई पहचान बनाई है।

अब समय आ गया है कि हम राजभाषा हिंदी को सही मायने में अपनाएं और अपना काम-काज मूल रूप से हिंदी में करें तथा अन्य पदाधिकारियों को भी हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित करें। मूल रूप से हिंदी में काम करने से ही हिंदी को राजभाषा का सही दर्जा मिलेगा जिसकी वह हकदार है। पत्रिका परिवार का हृदय से आभार। सभी रचनाकारों और पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएँ!

उदय प्रताप सिंह
सहायक निदेशक (राजभाषा)

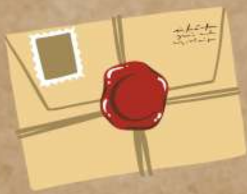

आपके पत्र

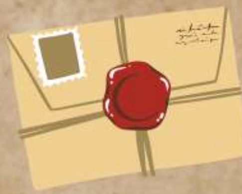

क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
20, सरोजनी नायडू मार्ग, प्रयागराज - 211001

REGIONAL CAPACITY BUILDING & KNOWLEDGE INSTITUTE
Indian Audit & Accounts Department
20, Sarojini Naidu Marg, Prayagraj – 211001

पत्रांक- क्षे.क्ष.नि.ज्ञा.सं.(प्र.)/पत्रिका पावती(132)/2024-25/ 314   दिनांक 21.10.2024

सेवा में,

हिंदी कक्ष
कार्यालय- महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
कर्नाटक

विषय- हिंदी पत्रिका 'कावेरी' के 29वें अंक की पावती।

संदर्भ- ईमेल से प्राप्त पत्र दिनांक 08.10.2024

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'कावेरी' के 29वें अंक की प्राप्ति हुई। इसके लिए सादर धन्यवाद ।

पत्रिका का कलेवर आकर्षक है। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनाएं प्रशंसनीय हैं। विशेषकर 'समावेशी विकास', 'विश्वगुरु का पैगाम', 'कृषक जीवन', 'अधूरा मन' एवं 'दाता' विशेष रूप से पठनीय, रोचक एवं सराहनीय हैं। पत्रिका में सम्मिलित कार्यालयीन गतिविधियों के चित्र आकर्षक हैं।

पत्रिका के बेहतरीन संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी/समन्वयक

भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
महानिदेशक लेखा परीक्षा का कार्यालय
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT
उत्तर रेलवे, बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली- 110001
NORTHERN RAILWAY, BARODA HOUSE, NEW DELHI - 110001

सं. हिन्दी /17-18/2015/पत्रिका-I
दिनांक:

सेवा में ,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय
कर्नाटक, बेंगलुरु

विषय:- हिन्दी पत्रिका 'कावेरी' के 29वें अंक की प्राप्ति पर सम्मति पत्र के प्रेषण के संबंध में ।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक गृह पत्रिका '**कावेरी**' के 29वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका का आवरण व पृष्ठ सज्जा अत्यंत आकर्षक व सुंदर है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ पठनीय व ज्ञानवर्धक है। **अधूरा मन, कौन हूँ मैं, आत्मनिर्भर भारत, समावेशी विकास** विशेष रूप से उल्लेखनीय व रोचक रचनाएँ है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

भवदीया

-ह-

हिन्दी अधिकारी

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) म.प्र.
53, अरेरा हिल्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल- 462011
क्र.हि.क./पा-7/ जावक - 42   दिनांक 17.10.2024

प्रति,

हिन्दी अधिकारी / हिन्दी कक्ष
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय
कर्नाटक, बेंगलूरु-560001

विषय : हिन्दी गृह पत्रिका "कावेरी" के 29वें अंक की पावती बाबत ।
संदर्भ : आपके ई-मेल पत्र दिनांक: 08.10.2024 ।

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा "कावेरी" के 29वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद । पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय है विशेष तौर पर पहला सुख निरोगी काया, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, आत्मनिर्भर भारत, विश्वगुरु का पैगाम, कृषक जीवन, आदि रचनाएँ सारगर्भित एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

अनुज

हिन्दी अधिकारी /हिन्दी कक्ष

भारत सरकार/GOVT.OF INDIA
कार्यालय : प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ओड़िशा, भुवनेश्वर- 751001
O/O THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), ODISHA, BHUBANESWAR-751001
स-रा.भा.अ./प.प्रति./37/2024-25/263   दिनांक:06.11.2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिंदी कक्ष)
कार्यालय- महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
कर्नाटक, बेंगलूरु-560001

विषय:- हिंदी गृह पत्रिका "कावेरी" के 29वें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित होने वाली हिंदी गृह पत्रिका "कावेरी" के 29वें अंक का ई-संस्करण ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुआ, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अत्यंत मनमोहक है। पत्रिका की आंतरिक साज-सज्जा, विषय एवं कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र स्वतः ही पाठकों का ध्यान आकर्षित कर रहे हैं। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ न केवल भावपूर्ण, प्रेरणादायी व ज्ञानवर्धक हैं बल्कि सामाजिक पक्षों से जुड़े कई संदेश भी उजागर करते हैं। विशेष तौर पर 'दाता', 'गांव याद आता है', 'समावेशी विकास', 'कौन हूँ मैं?' आदि रचनाएं प्रेरक, रुचिकर एवं सराहनीय हैं। राजभाषा हिंदी के विकास एवं कार्यान्वयन की दिशा में यह एक स्वर्णिम प्रयास है।

पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने हेतु संपादक मंडल एवं सभी रचनाकार निश्चय रूप से बधाई के पात्र हैं। पत्रिका की निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

मनोरंजन पाणिग्राही
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (राजभाषा)

कार्यालय महालेखाकार (ले० एवं हक०) उत्तराखण्ड
"महालेखाकार भवन", कौलागढ़, देहरादून-248195
पत्रांक26/हि०अनु०/2024-25/विभागीय पत्रिकाएं/पावती/245   दिनांक 21.10.2024

सेवा में,

हिन्दी कक्ष
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय
कर्नाटक, बेंगलूरु

विषय– हिन्दी पत्रिका 'कावेरी' के 29वें अंक की प्राप्ति के सम्बन्ध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका 'कावेरी' का 29वां अंक प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की एवं ज्ञानवर्धक हैं। वस्तुतः अंक सराहनीय, पठनीय एवं संग्रहणीय है तथा राजभाषा की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु एक सार्थक प्रयास है।

पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएं ।

भवदीया,

21/10/24
हिन्दी अधिकारी

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान, जयपुर

क्रमांक: रा.भा.अ./फाइल सं.-एफ-11005-02/2024-25/   दिनांक:05-11-2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिंदी कक्ष),
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
कर्नाटक, बैंगलूरु

विषय: हिंदी गृह पत्रिका "कावेरी" के 29वें अंक पर अभिमत – संप्रेषित।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित **हिंदी गृह पत्रिका "कावेरी" के 29वें अंक** की प्रति की प्राप्ति हुई है। आपकी पत्रिका के आकर्षक आवरण पृष्ठ के साथ-साथ इसकी साज-सज्जा सुंदर है और रचनाओं की विषयवस्तु भी प्रशंसनीय है।

"कावेरी" के संपादक मंडल एवं सभी रचनाकारों को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई तथा पत्रिका की प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

WAZIR SINGH

हिंदी अधिकारी

(ई-मेल-rajbhasha.raj2.au@cag.gov.in)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), हरियाणा,
प्लॉट सं. 5, सेक्टर 33-बी,
दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020
OFFICE OF THE
Pr. ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT), HARYANA
PLOT NO.5, SECTOR 33-B,
DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020

संख्या: हिंदी कक्ष/पत्रिका/प्रतिक्रिया/2024-25/   दिनांक/Dated: .10.2024

सेवा में,

हिंदी कक्ष,
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय,
कर्नाटक, बैंगलूरु

विषय -   कावेरी अंक 29वां ।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "कावेरी" की ई-प्रति प्राप्त हुई है। तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं पठनीय और रुचिकर हैं। पत्रिका में मौलिक सोच और अभिव्यक्ति की गहनता समाहित है। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है।

आशा है पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य और आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,

हिंदी अधिकारी
(हिंदी कक्ष)

दिनांक- .11.2024

सेवा में,

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय,
पार्क हाउस रोड,
बैंगलूरु, कर्नाटक-560001

विषय : ई-पत्रिका "कावेरी" के 29 वें अंक के प्रतिभाव संबंधी।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका "कावेरी" के 29वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। अंक भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणादायक है। अतीव विश्वकर्मा की रचना "समावेशी विकास" तथा दूसरी रचना "एक अनोखा राज्य-कर्नाटक" बहुत ही प्रशंसनीय है। उदय प्रताप सिंह की रचना पहला "सुख निरोगी काया", हिमांशु पटेल का लेख "कृत्रिम बुद्धिमत्ता" तथा उनकी कविता "गांव याद आता है", राहुल राज की कविता "कृषक जीवन", उम्दा है।

कविता खंड की रचनाएं प्रशंसनीय है।

रोचक पहेलियाँ, देखो हम ने देश तथा छायाचित्र मनोरंजक लगी। दक्षिण एवं दक्षिण पश्चिम क्षेत्रों का संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन-2024 के छायाचित्र अच्छे लगे।

सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

MANOJ KUMAR NO. 1

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

Digitally Signed by
Manoj Kumar

कार्यालय प्रधान महालेखाकार,
लेखापरीक्षा (II),पश्चिम बंगाल

OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL
AUDIT (II),
WEST BENGAL

संख्या- हिंदी कक्ष/पत्रिका पावती/93   दिनांक- 24/10/24

सेवा में,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी कक्ष
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय
कर्नाटक, बैंगलूरु- 560001

To,
The Senior Accounts Officer/Hindi Cell
Office of the Accountant General (A&E)
Karnataka, Bengaluru- 560001

विषय: कार्यालयीन हिंदी गृह पत्रिका 'कावेरी' के 29वें अंक के प्रतिभाव प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित "कावेरी" के 29वें अंक के ई-पत्रिका की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है। साथ ही साथ पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कविताएं और लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली है। इनमें से जो रचनाएँ अति उत्तम लगी वो है- आत्मनिर्भर भारत, एक अनोखा राज्य: कर्नाटक, समावेशी विकास, कौन हूँ मैं, कृषक जीवन, दाता तथा गाँव याद आता है आदि।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिये बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/ हिंदी कक्ष

Phone: (033) 2337-4916;   FAX: (033) 2334-7854,   E-mail: agauwestbengal2@cag.gov.in

---

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय
कर्नाटक, बैंगलूरु - 560001

विषय: कार्यालय की राजभाषा पत्रिका "कावेरी" के 29वें अंक का प्रेषण।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित की गई हिंदी पत्रिका "कावेरी" के 29वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक है। श्री उदय प्रताप सिंह हिंदी अधिकारी की "पहला सुख निरोगी काया", श्री के. एन. जयश्री राज स.ले.प.अ. की "आत्मनिर्भर भारत", श्री राहुल राज लेखाकार की "कृषक जीवन" रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

कर्नाटक के लोक नृत्य

निशा कुमारी
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

संगीत और नृत्य में शास्त्रीय और लोक रूपों की एक विस्तृत विविधता मौजूद है। कर्नाटक का संगीत और नृत्य न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि कलाकारों और दर्शकों की आध्यात्मिक बेहतरी के लिए भी हैं। प्राचीन काल से ही कर्नाटक शास्त्रीय संगीत और नृत्य की संरचना एवं स्वरूप को सुनिश्चित करने में कर्नाटक का प्रमुख योगदान रहा है।

कर्नाटक ने दुनिया को अपने कुछ प्रमुख संगीतकारों और कलाकारों के साथ भी प्रस्तुत किया है। वायलिन और मृदंगम के साथ वीणा प्रमुख संगीत वाद्ययंत्र हैं। कुचिपुड़ी मूल नृत्य शैली की उत्पत्ति कर्नाटक में हुई है। हालाँकि, भरतनाट्यम जैसे अन्य शास्त्रीय नृत्य रूप भी कर्नाटक के संगीत और नृत्य की परंपरा में महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

लोक प्रदर्शन कर्नाटक संगीत और नृत्य का बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा है। वे संगीत, नृत्य और नाट्य प्रदर्शन का खूबसूरती से मिश्रण करते हैं। इनमें से अधिकांश लोक रूप अभी भी अपने प्राथमिक अनुष्ठानिक स्वरूप में जारी हैं। कुनिथा पारंपरिक नृत्य नाटक हैं जिनमें संगीत और नृत्य का भरपूर उपयोग किया जाता है। इन कुनिथाओं के कुछ प्रमुख रूप हैं डोलु कुनिथास, पाटा कुनिथास, डोरवा कुनिथास। यक्षगान एक प्रमुख लोक संगीत प्रदर्शन है। कृष्णा पारिजात और भूत आराधना कर्नाटक संगीत और नृत्य के कुछ अन्य प्रमुख लोक रूप हैं।

भरतनाट्यम

भरतनाट्यम भारत में सबसे लोकप्रिय शास्त्रीय नृत्य रूपों में से एक है। तमिलनाडु में स्थापित भरतनाट्यम को कर्नाटक में भी काफी लोकप्रियता हासिल है। कर्नाटक के भरतनाट्यम नृत्य के विशेष विद्यालयों को बैंगलूरू और राज्य के विभिन्न शहरों में पढ़ाने और प्रदर्शन करने वाले अभ्यास कलाकारों द्वारा महान ऊंचाइयों पर ले जाया जा रहा है।

डोल्लू कुनिथा

डोल्लू कुनिथा कर्नाटक में लोक-नृत्य प्रदर्शन का एक प्रमुख रूप है। डोल्लू कुनिथा मुख्य रूप से उत्तरी कर्नाटक के कुरुबा समुदाय के पुरुषों और महिलाओं द्वारा किया जाता है। कर्नाटक में डोल्लू कुनिथा आमतौर पर किसी शुभ घटना के उपलक्ष्य में किया जाता है।

शिमोगा और चित्रदुर्ग जिले इस लोक शैली के प्रदर्शन में उत्कृष्टता के लिए विशेष रूप से जाने जाते हैं। भारत के लगभग सभी अन्य लोक प्रदर्शनों की तरह यह प्रदर्शन भी न केवल मनोरंजन का एक साधन है बल्कि इसका उद्देश्य कलाकारों और दर्शकों की आध्यात्मिक भलाई करना है।

कर्नाटक में डोल्लू कुनिथा के अलग-अलग धार्मिक पहलू हैं। इन्हें पारंपरिक रूप से बीरेश्वर के मंदिरों में प्रस्तुत किया जाता है। हालाँकि, हाल ही में इसका उपयोग वयस्क शिक्षा, साक्षरता कार्यक्रमों आदि सहित विभिन्न सरकारी योजनाओं और कार्यक्रमों के प्रचार के लिए किया गया है। यह विशेष रूप से उत्तरी कर्नाटक के सभी धार्मिक त्योहारों में आकर्षण का केंद्र बनता है। अक्सर इसका उपयोग फसल के मौसम का स्वागत करने के लिए किया जाता है।

पूजा कुनिथा

पूजा कुनिथा कर्नाटक का एक लोकप्रिय अनुष्ठानिक लोक नृत्य है जो बड़े पैमाने पर बैंगलूरू और मांड्या जिलों के आसपास प्रचलित है। यह बेहद रंगीन और देखने में आनंददायक है। इसमें विस्तृत मौखिक कथन की कीमत पर दृश्य वैभव पर जोर दिया जाता है। कर्नाटक की पूजा कुनिथा के लिए प्राथमिक शासक देवता अपने विभिन्न अवतारों में देवी शक्ति हैं।

यह सभी धार्मिक समारोहों का एक अभिन्न अंग है, विशेष रूप से शक्ति की पूजा से संबंधित समारोहों का। धार्मिक जुलूसों, मेलों और उत्सवों में इनका बहुतायत से प्रदर्शन किया जाता है। अपनी भव्यता के साथ, यह कलाकारों और दर्शकों के बीच उच्च आध्यात्मिकता की आभा पैदा करता है। प्रदर्शन के विशिष्ट धार्मिक स्वरों के बावजूद, कर्नाटक की पूजा कुनिथा को इसकी सुंदरता और रंगीनता के कारण व्यापक सराहना मिलती है।

पाटा कुनिथा

कर्नाटक में पाटा कुनिथा एक लोकप्रिय लोक-नृत्य है जो मैसूर क्षेत्र के निवासियों के बीच बेहद लोकप्रिय है। अनुष्ठानिक स्वर वाले अन्य कुनिथा या नृत्य-नाटकों की तरह, पाटा कुनिथा का मूल महत्व मुख्य रूप से धार्मिक है। इसमें बहुत अधिक वर्णन का उपयोग नहीं किया जाता बल्कि नर्तकों की लय और कौशल पर जोर दिया गया है। कर्नाटक का पाटा कुनिथा एक अत्यंत रंगीन नृत्य शैली है और अद्भुत दृश्य आनंद प्रदान करती है।

यक्षगान

यक्षगान कर्नाटक के सबसे लोकप्रिय पारंपरिक नाट्य रूपों में से एक है। कर्नाटक के यक्षगान को लोक, ग्रामीण या शास्त्रीय के रूप में वर्गीकृत करना मुश्किल है। इसे रंगमंच का एक रूप कहा जा सकता है जो कई प्रदर्शन परंपराओं को समाहित करता है। दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन से उत्पन्न यक्षगान का शाब्दिक अर्थ है दिव्य प्राणियों के गीत।

कर्नाटक के यक्षगान में नियोजित विषय आमतौर पर रामायण और महाभारत के महाकाव्यों और हिंदू पौराणिक कथाओं के अन्य महत्वपूर्ण प्रसंगों से लिए गए हैं। हालाँकि, एक थिएटर शैली होने के नाते, इसमें नृत्यों की तुलना में अधिक सौंदर्य स्वतंत्रता का आनंद मिलता है। यक्षगान पारंपरिक रूप से विशेष यात्रा करने वाले कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है जो 15 से 20 के समूह में एक गाँव से दूसरे गाँव की यात्रा करते हैं। कर्नाटक में यक्षगान का प्रदर्शन आमतौर पर रात में होता है। वे दोपहर के अंत में शुरू होते हैं और भोर के शुरुआती घंटों तक चलते रहते हैं। इन्हें देखने के लिए दूर-दूर से ग्रामीण इकट्ठा होते हैं और प्रदर्शन के लिए कोई टिकट नहीं लिया जाता है।

कर्नाटक के प्रसिद्ध मंदिर

कई प्राचीन मंदिरों का घर होने के नाते, कर्नाटक मंदिर पर्यटन के लिए अंतिम गंतव्य है। यह आश्चर्यजनक है कि कैसे एक राज्य विभिन्न राजवंशों से संबंधित कई मंदिरों का घर हो सकता है। अपनी धार्मिक मान्यताओं, ऐतिहासिक महत्व और स्थापत्य भव्यता के लिए जाना जाता है, कर्नाटक मंदिर हर आध्यात्मिक आत्मा और इतिहास प्रेमी के लिए अवश्य जाना चाहिए। यहां कुछ सबसे प्रसिद्ध मंदिरों की सूची दी गई है जो आध्यात्मिक रूप से उत्तेजक यात्राओं के लिए आपकी प्यास बुझा सकते हैं।

उडुपी श्रीकृष्ण मंदिर, उडुपी

कई प्राचीन मंदिरों का घर होने के नाते, कर्नाटक मंदिर पर्यटन के लिए अंतिम गंतव्य है। यह आश्चर्यजनक है कि कैसे एक राज्य विभिन्न राजवंशों से संबंधित कई मंदिरों का घर हो सकता है। अपनी धार्मिक मान्यताओं, ऐतिहासिक महत्व और स्थापत्य भव्यता के लिए जाना जाता है, कर्नाटक मंदिर हर आध्यात्मिक आत्मा और इतिहास प्रेमी के लिए अवश्य जाना चाहिए। यहां कुछ सबसे प्रसिद्ध मंदिरों की सूची दी गई है जो आध्यात्मिक रूप से उत्तेजक यात्राओं के लिए आपकी प्यास बुझा सकते हैं।

विद्याशंकर मंदिर, श्रृंगेरी:

राज्य के सबसे प्रसिद्ध तीर्थस्थलों में से एक, श्रृंगेरी में स्थित, विद्याशंकर मंदिर में हर साल हजारों भक्तों द्वारा दौरा किया जाता है। इसे 14वीं शताब्दी में गुरु विद्याशंकर की याद में बनवाया गया था। यह पूरी तरह से पत्थर से निर्मित एक शानदार स्मारक है, जिसमें द्रविड़ और होयसला स्थापत्य शैली दोनों शामिल हैं। इसके अलावा, पूरे मंदिर में कई शिलालेख हैं, जो विजयनगर साम्राज्य की झलक प्रदान करते हैं।

मुरुदेश्वर शिव मंदिर, भटकल

मुरुदेश्वर शहर में कंडुका पहाड़ी पर निर्मित, यह मंदिर वास्तव में राज्य के सबसे लोकप्रिय मंदिरों में से एक है। 123 फीट ऊंची मूर्ति भगवान शिव की दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी मूर्ति है। मंदिर तीन तरफ से अरब सागर से घिरा हुआ है, इस प्रकार लुभावने दृश्य पेश करता है। मंदिर का गोपुरम (237 फीट) भी भारत के सबसे ऊंचे गोपुरम में से एक है।

विट्ठल मंदिर, हम्पी:

अपनी असाधारण वास्तुकला और बेजोड़ शिल्प कौशल के लिए जाना जाता है, विट्ठल मंदिर यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल हम्पी में सबसे महत्वपूर्ण संरचनाओं में से एक है। भगवान विष्णु को समर्पित, यह इस बर्बाद शहर के सबसे लोकप्रिय आकर्षणों में से एक है। यह शानदार मंदिर अपनी आकर्षक संरचनाओं के लिए प्रसिद्ध है, जिसमें पत्थर का रथ और अखंड संगीत स्तंभ शामिल हैं

गोकर्ण महाबलेश्वर मंदिर, गोकर्ण:

गोकर्ण शहर कई प्राचीन समुद्र तटों और लोकप्रिय मंदिरों का घर है। गोकर्ण महाबलेश्वर मंदिर इस क्षेत्र के सबसे पवित्र मंदिरों में से एक है, जहां बड़ी संख्या में तीर्थयात्री आते हैं। भगवान शिव को समर्पित, मंदिर का उल्लेख रामायण और महाभारत में भी पाया गया है। गोकर्ण महाबलेश्वर मंदिर को काशी की तरह पवित्र माना जाता है; इस प्रकार, इसे अक्सर दक्षिण काशी कहा जाता है

चेन्नाकेशव मंदिर, बेलूर

चेन्नाकेशव मंदिर या विजयनारायण मंदिर कर्नाटक में सबसे अधिक देखे जाने वाले मंदिरों में से एक है। भगवान चेन्नाकेशव (भगवान विष्णु का एक रूप) को समर्पित, इसका निर्माण 12 वीं शताब्दी में राजा विष्णुवर्द्ध द्वारा किया गया था। मंदिर की दीवारों पर आश्चर्यजनक कलाकृति और जटिल नक्काशी उस समय के दौरान लोगों के जीवन को प्रदर्शित करती है।

मल्लिकार्जुन मंदिर, पट्टडकल

यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल पट्टडकल, कई हिंदू और जैन मंदिरों का घर है। इन मंदिरों में से एक मल्लिकार्जुन मंदिर है, जो 7 वीं -8 वीं शताब्दी में निर्मित एक प्राचीन मंदिर है। भगवान शिव इस मंदिर के पीठासीन देवता हैं, जो पूरे वर्ष शिव भक्तों को आकर्षित करते हैं। द्रविड़ वास्तुकला और महाभारत, रामायण और पंचतंत्र की सुंदर नक्काशी इस मंदिर के प्रमुख आकर्षण हैं

विरुपाक्ष मंदिर, हम्पी

यह प्रतिष्ठित मंदिर हम्पी में स्मारकों के समूह का भी एक हिस्सा है। यह भगवान शिव को समर्पित है, जिन्हें देवी पंपा देवी की पत्नी विरुपाक्ष के रूप में पूजा जाता है। यह मंदिर उन कुछ मंदिरों में से एक है जो अभी भी हम्पी में पूजा में उपयोग किए जाते हैं, इस प्रकार, राज्य में एक महत्वपूर्ण तीर्थस्थल है। फरवरी में वार्षिक रथ उत्सव और दिसंबर में विरुपाक्ष और पंपा के विवाह उत्सव इस मंदिर की यात्रा के लिए सबसे अच्छा समय है।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति बैठक

कर्नाटक भोजन और परिधान

मनीषा विश्वकर्मा
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

कर्नाटक, विविध संस्कृतियों और परंपराओं का राज्य है, यहाँ के खान-पान और पहनावे की एक समृद्ध परंपरा है जो इसकी जीवंत विरासत और भौगोलिक विविधता को दर्शाती है। तटीय व्यंजनों के मसालेदार स्वाद से लेकर पारंपरिक परिधानों के सुरुचिपूर्ण परिधानों तक, कर्नाटक का भोजन और पहनावा यहाँ के लोगों और उनके जीवन के तरीके का सार प्रस्तुत करता है।

कर्नाटक का भोजन तटीय, मलनाड (पहाड़ी क्षेत्र) और मैदानी क्षेत्रों से प्रभावित स्वादों का एक रमणीय मिश्रण है। चावल, रागी (फिंगर मिलट) और ज्वार (सोरघम) मुख्य अनाज हैं, जो कई व्यंजनों का आधार बनते हैं।

तटीय कर्नाटक अपने समुद्री खाद्य व्यंजनों जैसे मंगलोरियन मछली करी, झींगा गस्सी और नीर डोसा (चावल के क्रेप्स) के लिए प्रसिद्ध है। मलनाड क्षेत्र में, अक्की रोटी (चावल की रोटी), और कडुबू (भाप से पकाए गए चावल के पकौड़े) जैसे व्यंजन लोकप्रिय हैं। कर्नाटक के मैदानी इलाकों में बीसी बेले बाथ (गर्म दाल चावल), रागी मुद्दे (रागी बॉल्स) और सारू (मसालेदार ग्रेवी) जैसे शाकाहारी व्यंजनों की भरमार है। कोई भी भोजन विभिन्न प्रकार की चटनी, अचार, मैसूर पाक और होलिगे (मीठी रोटी) जैसी मिठाइयों के बिना पूरा नहीं होता है।

कर्नाटक की पारंपरिक पोशाक इसकी सांस्कृतिक विविधता और विरासत को दर्शाती है। महिलाएँ इल्कल साड़ी, कसुती साड़ी और मैसूर सिल्क साड़ी जैसी खूबसूरत साड़ियों से सजती हैं, जिनमें से प्रत्येक अपनी जटिल बुनाई और जीवंत रंगों के लिए प्रसिद्ध है। पुरुष आमतौर पर पारंपरिक धोती या पंचा पहनते हैं, जिसे शर्ट या कुर्ते के साथ पहना जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में, महिलाएँ अक्सर क्षेत्र की पारंपरिक पोशाक पहनती हैं, जैसे कोडवा शैली की साड़ी या कूर्गी पुथक।

कर्नाटक की संस्कृति और परंपराओं में भोजन और वस्त्र महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जो अक्सर धार्मिक त्योहारों और सामाजिक समारोहों से जुड़े होते हैं। उगादी और दशहरा जैसे त्यौहारों को भव्य दावतों के साथ मनाया जाता है, जिसमें कर्नाटक के व्यंजनों के विविध स्वादों को प्रदर्शित किया जाता है। सांस्कृतिक कार्यक्रमों, शादियों और धार्मिक समारोहों के दौरान पारंपरिक पोशाक पहनी जाती है, जो समुदाय के गौरव और पहचान का प्रतीक है। कर्नाटक में पारंपरिक व्यंजन और पहनावे का बोलबाला है, लेकिन आधुनिक प्रभावों और वैश्वीकरण के कारण फ्यूजन व्यंजन और समकालीन फैशन के रुझान उभरे हैं।

बेंगलूरु जैसे शहरी केंद्रों में पारंपरिक और पश्चिमी परिधानों का मिश्रण देखने को मिलता है, जो शहर की महानगरीय प्रकृति को दर्शाता है। कर्नाटक में पारंपरिक व्यंजन और पहनावे का बोलबाला है, लेकिन आधुनिक प्रभावों और वैश्वीकरण के कारण फ्यूजन व्यंजन और समकालीन फैशन के रुझान उभरे हैं। बेंगलूरु जैसे शहरी केंद्रों में पारंपरिक और पश्चिमी परिधानों का मिश्रण देखने को मिलता है, जो शहर की महानगरीय प्रकृति को दर्शाता है। इसी तरह, रेस्तरां और भोजनालय विभिन्न व्यंजनों के मिश्रण का प्रयोग करते हैं। वह पारंपरिक स्वादों को वैश्विक सामग्रियों के साथ मिलाकर विभिन्न स्वादों को पूरा करते हैं।

अंत में, कर्नाटक के व्यंजन और पहनावे में इसकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और भौगोलिक विविधता का सार समाहित है। चाहे तटीय व्यंजनों के सुगंधित मसालों का स्वाद लेना हो या पारंपरिक साड़ियों की जटिल बुनाई की प्रशंसा करना हो, कर्नाटक के भोजन और पहनावे का अनुभव करना एक ऐसी यात्रा है जो इंद्रियों को प्रसन्न करती है और भूमि और उसके लोगों की भावना का जश्न मनाती है।

पेरिस ओलंपिक में भारतीय खिलाड़ियों का प्रदर्शन

आर जयम्मा
वरिष्ठ लेखाधिकारी

इस साल के खेलों के लिए भारतीय दल में 117 एथलीट, 110 प्रतियोगी और 7 वैकल्पिक खिलाड़ी शामिल थे, इसके अलावा 118 सहायक कर्मचारी और 22 अधिकारी भी शामिल थे। गगन नारंग को मिशन का प्रमुख नियुक्त किया गया। दो बार की ओलंपिक पदक विजेता पीवी सिंधु और चार बार के ओलंपियन शरत कमल उद्घाटन समारोह के लिए भारत के ध्वजवाहक थे।

भारतीय दल ने निशानेबाजी से शुरू होकर 16 खेलों में हिस्सा लिया था। पेरिस ओलंपिक में भारत ने कुल छह पदक जीते। निशानेबाजों ने 28 जुलाई को भारत का खाता खोला और कुल तीन कांस्य पदक जीतकर शीर्ष पर रहा।

पेरिस 2024 ओलंपिक में 6 पदक जीतने वाले खिलाड़ियों का विवरण, जिनमें एक रजत और 5 कांस्य पदक शामिल हैं।

1. हरियाणा की बाईस वर्षीय मनु भाकर 20 वर्षों में किसी व्यक्तिगत स्पर्धा में ओलंपिक फाइनल में पहुंचने वाली तथा भारत के लिए महिलाओं की 10 मीटर एयर पिस्टल में कांस्य पदक जीतने वाली पहली महिला निशानेबाज बन गईं।

2. हरियाणा के दोनों एथलीट मनु भाकर और सरबजोत सिंह ने पेरिस 2024 ओलंपिक में 10 मीटर एयर पिस्टल मिश्रित टीम निशानेबाजी स्पर्धा में कांस्य पदक जीतकर इतिहास रच दिया।

3. स्वप्निल कुसाले ने पुरुषों की 50 मीटर राइफल 3 पोजीशन फाइनल में ऐतिहासिक कांस्य पदक जीता। यह इस श्रेणी में भारत का पहला पदक था। स्वप्निल ने मनु भाकर और सरबजोत सिंह के साथ मिलकर पेरिस 2024 ओलंपिक में तीसरा पदक जीता, जो सभी निशानेबाजी से था, जिससे यह भारतीय निशानेबाजी महाद्वीप के लिए सबसे सफल खेल बन गया।

4. हरियाणा के इक्कीस वर्षीय अमन सहरावत शोने पेरिस 2024 ओलंपिक में कांस्य पदक हासिल करके व्यक्तिगत ओलंपिक पदक जीतने वाले सबसे कम उम्र के भारतीय पहलवान हैं।

5. कप्तान हरमनप्रीत सिंह की अगुआई में भारतीय हॉकी टीम ने स्पेन को 2-1 से हराकर कांस्य पदक जीता और पेरिस ओलंपिक 2024 और टोक्यो ओलंपिक 2020 में लगातार दो कांस्य पदक जीतकर इतिहास रच दिया। पीआर श्रीजेश के गोलकीपर ने अपने अंतरराष्ट्रीय हॉकी करियर के अंतिम दो मिनट में दो बेहतरीन बचाव करके जीत में योगदान दिया। भारतीय हॉकी टीम का ओलंपिक में 8 स्वर्ण पदक, एक रजत और चार कांस्य पदक जीतने का शानदार इतिहास रहा है, जिसमें पदकों की संख्या 13 है।

6. हरियाणा के रहने वाले छब्बीस वर्षीय नीरज चोपड़ा ने ओलंपिक में व्यक्तिगत स्पर्धा में वह कर दिखाया जो किसी भारतीय ने नहीं किया। स्वर्ण प दक जीतने के बाद उन्होंने टोक्यो ओलंपिक 2020 में स्वर्ण पदक जीता और पेरिस ओलंपिक 2024 में भाला फेंक स्पर्धा में रजत पदक जीता।

भारतीय एथलीटों ने 2024 पेरिस ओलंपिक में पदक तालिका में 71वें स्थान पर रहते हुए महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की।

पेरिस ओलंपिक 2024 का अंत 11 अगस्त 2024 को समापन समारोह के साथ हुआ। भारतीय हॉकी टीम के गोलकीपर पीआर श्रीजेश और पिस्टल शूटर मनु भाकर पेरिस, फ्रांस में स्टेड डी फ्रांस में पेरिस 2024 ओलंपिक खेलों के समापन समारोह में भारतीय दल के संयुक्त ध्वजवाहक थे।

भारत की 'गार्डन सिटी' बेंगलूरु

प्रीति
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

बेंगलूरु के संस्थापक – “केम्पेगौड़ा” ने इस शहर का नाम अपनी माँ के जन्मस्थान बेंगलूरु के नाम पर रखा था। बेंगलूरु कर्नाटक की राजधानी होने के साथ-साथ एक बहुत ही खूबसूरत शहर है। यह दक्कन के पठार पर बहुत अधिक ऊंचाई पर स्थित है। यह "गार्डन सिटी" अर्थात "बगीचों के शहर" के रूप में प्रसिद्ध है। यह शहर आईटी पार्कों का केंद्र भी है। इसी कारण इसे भारत की "सिलिकॉन वैली" या "भारत की आईटी राजधानी" के रूप में भी जाना जाता है। इंफ़ोसिस, विप्रो, इसरो और एच ए एल जैसी कंपनियों का मुखालय इस शहर में स्थित है। यह शहर सिर्फ आईटी हब ही नहीं, कन्नड़ फिल्म उद्योग का भी केंद्र है।

बेंगलूरु की आबादी लगभग 8.42 मिलियन है और यह एक महानगरीय शहर है। यह भारत में तीसरा सबसे अधिक आबादी वाला शहर है। आईटी हब होने के कारण, यह शहर देश भर से बहुत से लोगों को यहाँ आने और बसने के लिए आकर्षित करता है, जो इसकी बढ़ती आबादी का एक मुख्य कारण है।

बेंगलूरु कर्नाटक की संस्कृति का अनुपालन करता है और शहर में रहने वाले लोग सभी परंपराओं का पालन करते है। यहाँ सभी त्योहारों का बहुत खुशी और गर्व के साथ पालन करते है। इस शहर में रहने वाले लोग- कन्नड़, अँग्रेजी और हिन्दी बोलते हैं। साथ ही यह शहर, बाहरी लोगों के कारण अन्य भाषाओं के लिए भी खुला है और यहाँ तक की गैर-हिन्दी भाषी होने के बावजूद यहाँ के लोग हिन्दी भाषा को अच्छी तरह से समझते हैं।

कुछ साल पहले मिनिस्ट्री ऑफ हाउसिंग एंड अर्बन अफेयर्स ने उन शहरों की सूची जारी की थी, जो रहने के लिहाज़ से एकदम बढ़िया हैं। इस लिस्ट में 111 शहरों को रखा गया था और जीवन की सुगमता सूचकांक (Ease of Living Index) के आधार पर उन्हें क्रम दिया गया, जिसमें बेंगलूरू को रहने के लिए देश का सबसे शानदार शहर माना गया। यही नहीं, एक रिपोर्ट ग्लोबल सर्वे ने भी जारी की थी, जिसमें दक्षिण भारत की सिलिकॉन वैली और तकनीकी हब बेंगलूरू को दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, और चेन्नई जैसे अन्य मेट्रो शहरों से बढ़िया बताया गया है।

कर्नाटक की राजधानी बेंगलूरू पहले उत्तर भारतीय लोगों को घूमने-फिरने के लिहाज़ से पसंद था। लेकिन अब यहाँ स्थानीय लोगों के अलावा बड़ी संख्या में दूसरे राज्यों ख़ासकर उत्तर भारत से लोग रह रहें हैं। हालाँकि, इसके पीछे का सबसे बड़ा कारण बेंगलूरु का आईटी ऑफिस का हब होना है। बेंगलूरु में दुनिया की A1 कंपनियाँ हैं, जिनमें लाखों लोग काम कर रहें हैं।

भले ही बेंगलूरु को भारत का सबसे सुरक्षित शहर नहीं कह सकते, लेकिन फिर भी यह भारत के दूसरे शहरों के मुकाबले ज्यादा सुरक्षित है। ग्लोबल सर्वे के अनुसार बेंगलूरु भारत का सबसे सुरक्षित शहर और विदेशी नागरिकों के लिए फ्रेंडली सिटी के मामले में तीसरे नंबर पर है।

नौकरी करने वाली ज़्यादातर आबादी बेंगलूरु में रहती है। ट्रैफिक के मामले में भी यह शहर काफी व्यस्त है। ऐसे में हर कोई सोच सकता है कि यह काफी प्रदूषित शहर होगा। लेकिन भारत के दूसरे अन्य व्यस्त शहरों की तुलना में बेंगलूरु में प्रदूषण काफ़ी कम है। इसलिए यहाँ के लोग अन्य शहरों के मुक़ाबले कम बीमार पड़ते है। मौसम के मामले में बेंगलूरु लाख गुना बेहतर है। सालभर बेंगलूरु का मौसम बहुत ही सुहावना बना रहता है। यहाँ न ज़्यादा गर्मी पड़ती है और न ही ज़्यादा सर्दी। यहाँ पर पूरा साल केवल पंखे की हवा में निकल सकता है।

बेंगलूरु परम्पराओं, संस्कृतियों और व्यंजनों की विविधता वाला एक सुंदर शहर है। बेंगलूरु के लोग सौम्य व हमेशा स्वागत करने के लिए तैयार रहने वाले होते है। सुखद मौसम, भोजन, पर्यटक आकर्षण आदि का आनंद लेने के लिए सभी को जीवन में एक बार इस शहर का दौरा अवश्य करना चाहिए।

कर्नाटक में अध्ययन

भारत के दक्षिणी भाग में बसा कर्नाटक राज्य शैक्षणिक प्रतिभा के केंद्र के रूप में सामने आता है। अपने अकादमिक कौशल और अभिनव अनुसंधान के लिए प्रसिद्ध संस्थानों के समृद्ध ताने-बाने का दावा करते हुए, कर्नाटक, महत्वाकांक्षी विद्वानों के लिए अध्ययन के ढेरों अवसर प्रदान करता है। प्रबंधन से लेकर कानून तक, डिजाइन से लेकर तंत्रिका विज्ञान तक, राज्य में कई तरह के प्रतिष्ठित संस्थान हैं, जिन्होंने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त की है।

कर्नाटक के शैक्षणिक परिदृश्य को आकार देने वाले कुछ प्रमुख संस्थानों पर एक नज़र डालते हैं:

1. **भारतीय प्रबंधन संस्थान बैंगलोर (IIM B)**: 1973 में स्थापित, IIM बैंगलोर भारत के प्रमुख प्रबंधन संस्थानों में से एक है। अपने कठोर पाठ्यक्रम, विश्व स्तरीय संकाय और अनुभवात्मक शिक्षा पर जोर देने के लिए प्रसिद्ध, IIM B प्रमुख पोस्ट ग्रेजुएट प्रोग्राम इन मैनेजमेंट (PGP), फेलो प्रोग्राम इन मैनेजमेंट (FPM) और कार्यकारी शिक्षा कार्यक्रमों सहित विभिन्न कार्यक्रम प्रदान करता है।

2. **भारतीय विज्ञान संस्थान (IISc)**: एक सदी से अधिक की विरासत के साथ, IISc बैंगलोर वैज्ञानिक अनुसंधान और शिक्षा के लिए भारत का अग्रणी संस्थान है। अपने अंत:विषय दृष्टिकोण और अत्याधुनिक अनुसंधान सुविधाओं के लिए जाना जाने वाला, IISc विज्ञान और इंजीनियरिंग के विभिन्न विषयों में स्नातक, स्नातकोत्तर और डॉक्टरेट कार्यक्रम प्रदान करता है।

3. **राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य और तंत्रिका विज्ञान संस्थान (NIMHANS)**: मानसिक स्वास्थ्य और तंत्रिका विज्ञान शिक्षा के लिए एक शीर्ष केंद्र के रूप में, बेंगलूरु में NIMHANS अपने व्यापक रोगी देखभाल, अभिनव अनुसंधान और उच्च गुणवत्ता वाले प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए विश्व स्तर पर प्रसिद्ध है। यह मानसिक स्वास्थ्य और तंत्रिका विज्ञान से संबंधित विषयों में MD, DM, M.Sc. और Ph.D. सहित कई शैक्षणिक पाठ्यक्रम प्रदान करता है।

4. **बेंगलूरु मेडिकल कॉलेज और अनुसंधान संस्थान (BMC)**: कर्नाटक के सबसे पुराने मेडिकल कॉलेजों में से एक BMC का कुशल स्वास्थ्य सेवा पेशेवरों को तैयार करने का समृद्ध इतिहास रहा है। अत्याधुनिक बुनियादी ढांचे और अनुभवी संकाय के साथ, BMC चिकित्सा, शल्य चिकित्सा और संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान में स्नातक और स्नातकोत्तर कार्यक्रम प्रदान करता है।

5. **राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान (NID)**: रचनात्मक प्रतिभा को पोषित करने और डिजाइन नवाचार को बढ़ावा देने के लिए समर्पित, बेंगलूरु में एनआईडी का आर. एंड डी. परिसर औद्योगिक डिजाइन, संचार डिजाइन और इंटरेक्शन डिजाइन जैसे विषयों में स्नातक और मास्टर कार्यक्रम प्रदान करता है, जो छात्रों को डिजाइन में प्रभावशाली करियर के लिए तैयार करता है।

6. **नेशनल लॉ स्कूल ऑफ इंडिया यूनिवर्सिटी (NLSIU)**: बेंगलूरु में स्थित NLSIU कानूनी शिक्षा और शोध में अपनी उत्कृष्टता के लिए प्रसिद्ध है। 1987 में स्थापित, यह बीए एलएलबी, एलएलएम और पीएचडी कार्यक्रम प्रदान करता है, जो कानून के क्षेत्र में अंतःविषय दृष्टिकोण और अनुभवात्मक शिक्षा पर जोर देता है।

7. **नेशनल सेंटर फॉर बायोलॉजिकल साइंसेज (NCBS)**: टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च (टीआईएफआर) के तहत एक प्रमुख शोध संस्थान के रूप में, एनसीबीएस जीवविज्ञान में मौलिक शोध पर ध्यान केंद्रित करता है। यह पीएचडी और एकीकृत पीएचडी कार्यक्रम प्रदान करता है, जो आणविक जीव विज्ञान से लेकर पारिस्थितिकी तक के क्षेत्रों में एक जीवंत शोध वातावरण को बढ़ावा देता है।

कर्नाटक का शैक्षणिक परिदृश्य न केवल अपने प्रसिद्ध संस्थानों के लिए बल्कि अपनी जीवंत संस्कृति के लिए भी चमकता है, जो समग्र शिक्षा और व्यक्तिगत विकास के लिए अनुकूल है। शैक्षणिक कठोरता, शोध के अवसरों और नवाचार के लिए अनुकूल वातावरण के मिश्रण के साथ, कर्नाटक दुनिया भर के महत्वाकांक्षी विद्वानों को एक परिवर्तनकारी शैक्षणिक यात्रा पर निकलने के लिए आमंत्रित करता है। चाहे प्रबंधन, विज्ञान, कानून, स्वास्थ्य सेवा या डिजाइन के क्षेत्र में, कर्नाटक के संस्थान अकादमिक उत्कृष्टता के प्रतीक के रूप में खड़े हैं, जो कल के नेताओं और नवप्रवर्तकों को आकार देते हैं।

शैक्षणिक संस्थानों की एक झलक...

भारतीय प्रबंधन संस्थान बैंगलोर (IIM B)

भारतीय विज्ञान संस्थान (IISc)

राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य और तंत्रिका विज्ञान संस्थान (NIMHANS)

राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान (एनआईडी)

नेशनल लॉ स्कूल ऑफ इंडिया यूनिवर्सिटी (NLSIU)

बैंगलोर मेडिकल कॉलेज और अनुसंधान संस्थान (BMC)

कश्मीर-एक जन्नत

नमस्ते शारदा देवी काश्मीर पुरवासिनि।
त्वामहं प्रार्थये नित्यं विद्यादानं च देहि में।।

एस.एन. शंकर
सहायक पर्यवेक्षक (सेवानिवृत्त)

कश्मीर राज्य, कश्यप ऋषि का निवास स्थान था। कश्मीर का नाम कश्यप ऋषि के नाम पर ही रखा गया था। कश्मीर में सर्वप्रथम कश्यप समाज निवास करता था। कश्मीरी भाषा शारदा लिपि में लिखी जाती है। कश्मीर पहले जम्मू-कश्मीर, लद्दाख के साथ जुड़ा हुआ राज्य था। अब जम्मू कश्मीर और लद्दाख दो अलग-अलग केंद्र शासित प्रदेश हो गए हैं। कश्मीर में प्रकृति के सौंदर्य का ख़जाना छुपा हुआ है। कश्मीर के बारे में एक कहावत है कि अमृत जहाँ गिरा था, वहाँ कश्मीर हुआ। कश्मीर राज्य भारत के निवासियों व प्रवासी लोगों को स्वर्ग के समान दिखाई देता है। कश्मीर में बहुत से दर्शनीय स्थल हैं जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं:- अमरनाथ, पीरबाबा दरगाह, राज़दान दर्रा, गुलमर्ग, सोनमर्ग, शंकराचार्य मंदिर, डल झील, निशात गार्डन, शालीमार बाग, मुगल गार्डन, ट्यूलिप गार्डन, वुलर झील, क्षीर भवानी मंदिर, गुरेज़ घाटी, शारदापीठ।

शंकराचार्य की पहाड़ियों से पूरे श्रीनगर का 360 डिग्री दृश्य देखा जा सकता है। कश्मीर में झेलम, किशन गंगा, चेनाब आदि नदियाँ बहती हैं। किशन गंगा नदी का भारत से उद्गम होता है लेकिन यह पाकिस्तान में बहती है। इस पर एक जल विद्युत परियोजना है। वहाँ पर मेरे बड़े भाई श्री. नटराज एस.एन. जनरल मैनेजर व प्रभारी थे। यह प्रोजेक्ट श्रीनगर से 40 कि.मी. दूर बंडीपोरा में है। मेरे बड़े भाई का स्थानांतरण बंडीपोरा (कश्मीर) से फ़रीदाबाद को हो रहा था। इसी कारण हमें कश्मीर में दो सप्ताह के लिए प्रवास करने का अवसर मिला। किशन गंगा नदी कश्मीर (भारत) से बहकर पाकिस्तान में जाती है, जहाँ इसका नाम बदल कर नीलम नदी हो जाता है। इसके जल और विद्युत उत्पादन का ज़्यादा उपयोग पाकिस्तान द्वारा किया जाता है।

डल झील में नौका विहार होता है। नौकाओं में सब्जी, फल, आभूषण, शाल व कालीन जैसी बहुत सी वस्तुओं का व्यापार होता है। हाउसबोट में रहने के लिए घर भी होता है। डल झील के सामने बहुत सी दुकानें हैं जहाँ पर शुद्ध मसाले, बादाम व केसर मिलता है। कश्मीर की पशमीना शॉल व कालीन, केसर, बादाम, क्रिकेट बैट, मसाले और सेब आदि विश्व प्रसिद्ध हैं।

डल झील, कश्मीर

डल झील में शाम के समय दो घंटे का लेज़र शो व म्यूज़िकल फाउंटेन शो का कार्यक्रम होता है। यह शो ठीक वैसे ही होता है जैसे कृष्ण सागर बाँध पर वृंदावन गार्डन, मैसूर में होता है। लेज़र शो में श्रीनगर की पौराणिक कथाओं व इतिहास का बहुत ही खूबसूरती से प्रदर्शन किया जाता है।

कश्मीर में बहुत से बगीचों को सीढ़ीनुमा सात परतों में बनाया गया हैं। बहुत से रंग-बिरंगे फूल व पेड़-पौधे इन बगीचों में पाए जाते हैं। कश्मीर में चिनार का पेड़ बहुत अधिक पाया जाता है, जिससे बनने वाला क्रिकेट बैट विश्व भर में प्रसिद्ध है। कश्मीर की यात्रा करके और वहां की मनमोहक सुंदरता देख कर मन प्रफुल्लित हो गया और यह एहसास हुआ कि सच में कश्मीर को जिसने भी जन्नत कहा है सच ही कहा है।

ट्यूलिप बगीचा, कश्मीर

"गर फ़िरदौस बर-रू-ये ज़मीं अस्त
हमीं अस्त ओ, हमीं अस्त ओ, हमीं अस्त"

अमीर खुसरो के उपरोक्त शेर का हिंदी अनुवाद है कि अगर धरती पर कहीं स्वर्ग है तो यहीं है, यहीं है, यहीं है।

कन्नड़ भाषा

प्रीति
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

दक्षिण-पश्चिम भारत के कर्नाटक राज्य की राजभाषा, कन्नड़, दक्षिण द्रविड़ शाखा से सम्बद्ध है। यह साहित्यिक परम्परा वाली चार प्रधान द्रविड़ भाषाओं में दूसरी सबसे प्राचीन भाषा है। कन्नड़ लेखन पैटर्न का पंद्रह सौ वर्षों का इतिहास है। हालमिदी स्थित पहला कन्नड़ अभिलेख 450 ई. का है।

कन्नड़ लिपि का विकास अशोक की ब्राह्मी लिपि के दक्षिणी प्रकारों से हुआ है और तेलुगु लिपि से इसका निकट सम्बन्ध है। इन दोनों की उत्पत्ति एक प्राचीन कन्नड़ लिपि (10वीं शताब्दी) से हुई है। इस भाषा के विकास में तीन ऐतिहासिक चरणों की पहचान की गई है।

- प्राचीन कन्नड़ (450-1200 ई.),
- मध्य कन्नड़ (1200-1700 ई.)
- आधुनिक कन्नड़ (1700 ई. से वर्तमान काल तक)

कन्नड़ मुख्यतः कर्नाटक और इसके पड़ोसी राज्यों में बोली जाती है। तुलु और काडगु बोलने वालों की यह दूसरी भाषा है। 1997 में कन्नड़भाषी लोगों की संख्या अनुमानतः चार करोड़ साठ लाख थी। वाक्य में शब्द क्रम कर्ता–कर्म–क्रिया का होता है, जैसा अन्य द्रविड़ भाषाओं में है। क्रियाओं को पुरुष, वचन और लिंग के आधार पर चिह्नित किया जाता है। इस भाषा में मूर्धन्य व्यंजन होते हैं, उदाहरण के लिए, ट, ड और न की ध्वनियों का उच्चारण तालु पर मुड़ी हुई जिह्वा के छोर की स्थिति से होता है जो एक ख़ास द्रविड़ लक्षण है। सबसे प्राचीन उपलब्ध व्याकरण नागवर्मा (आरम्भिक 12वीं शताब्दी) का है। केशिराज (1260 ई.) के शब्द मणि दर्पण को अब भी सम्मान प्राप्त है।

कन्नड़ के तीन क्षेत्रीय प्रकारों की पहचान की जा सकती है, दक्षिणी (मैसूर), उत्तरी (धारवाड़) और तटीय (मंगलोर)। सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक कारकों के आधार पर इस भाषा में बोलीगत भिन्नताएँ भी परिलक्षित होती हैं। इसी तरह से औपचारिक और सामान्य बोलचाल के प्रकार भी हैं। बेंगलूरु और मैसूर में बोली जाने वाली भाषा को उत्कृष्ट कोटि का माना जाता है।

कन्नड़ तथा कर्नाटक शब्दों की व्युत्पत्ति के संबंध में यदि किसी विद्वान् का यह मत है कि 'कंरिदुअनाडु' अर्थात् 'काली मिट्टी का देश' से कन्नड़ शब्द बना है तो दूसरे विद्वान् के अनुसार 'कपितु नाडु' अर्थात् 'सुगंधित देश' से 'कन्नाडु' और 'कन्नाडु' से 'कन्नड़' की व्युत्पत्ति हुई है। कन्नड़ साहित्य के इतिहासकार आर.नरसिंहाचार ने इस मत को स्वीकार किया है। कुछ वैयाकरणों का कथन है कि कन्नड़ संस्कृत शब्द 'कर्नाट' का तद्भव रूप है। यह भी कहा जाता है कि 'कर्णयो अटति इति कर्नाटक' अर्थात जो कानों में गूँजता है वह कर्नाटक है।

प्राचीन ग्रंथों में कन्नड़, कर्नाट, कर्नाटक शब्द समानार्थ में प्रयुक्त हुए हैं। महाभारत में कर्नाट शब्द का प्रयोग अनेक बार हुआ है। दूसरी शताब्दी में लिखे हुए तमिल 'शिलप्पदिकारम्' नामक काव्य में कन्नड़ भाषा बोलनेवालों का नाम 'करुनाडर' बताया गया है। वराहमिहिर के बृहत्संहिता, सोमदेव के 'कथासरित्सागर' गुणाढय की पैशाची 'बृहत्कथा' आदि ग्रंथों में भी कर्नाट शब्द का बराबर उल्लेख मिलता है।

अंग्रेजी में कर्नाटक शब्द विकृत होकर कर्नाटिक अथवा केनरा, फिर केनरा से केनारीज़ बन गया है। उत्तरी भारत की हिंदी तथा अन्य भाषाओं में कन्नड़ शब्द के लिए कनाडी, कन्नडी, केनारा, कनारी का प्रयोग मिलता है। आजकल कर्नाटक तथा कन्नड़ शब्दों का निश्चित अर्थ में प्रयोग होता है–'कर्नाटक' प्रदेश का नाम है और 'कन्नड़' भाषा का।

द्राविड़ भाषा परिवार की भाषाएँ पंचद्राविड़ भाषाएँ कहलाती हैं। किसी समय इन पंचद्राविड भाषाओं में कन्नड, तमिल, तेलुगु, गुजराती तथा मराठी भाषाएँ सम्मिलित थीं। किंतु आजकल पंचद्राविड़ भाषाओं के अंतर्गत कन्नड़, तमिल, तेलुगु, मलयालम तथा तुलु मानी जाती हैं। वस्तुत: तुलु कन्नड़ की ही एक पुष्ट बोली है जो दक्षिण कन्नड जिले में बोली जाती है। तुलु के अतिरिक्त कन्नड की अन्य बोलियाँ हैं–कोडगु, तोड, कोट तथा बडग। कोडगु कुर्ग में बोली जाती है और बाकी तीनों का नीलगिरि जिले में प्रचलन है। नीलगिरि जिला तमिलनाडु राज्य के अंतर्गत है।

ईसा के पूर्व कन्नड़ का कोई लिखित रूप नहीं मिलता। प्रारंभिक कन्नड का लिखित रूप शिलालेखों में मिलता है। इन शिलालेखों में हल्मिडि नामक स्थान से प्राप्त शिलालेख सबसे प्राचीन है, जिसका रचनाकाल ४५० ई. है। सातवीं शताब्दी में लिखे गए शिलालेखों में बादामि और श्रवण बेलगोल के शिलालेख महत्वपूर्ण हैं। प्राय: आठवीं शताब्दी के पूर्व के शिलालेखों में गद्य का ही प्रयोग हुआ है और उसके बाद के शिलालेखों में काव्यलक्षणों से युक्त पद्य के उत्तम नमूने प्राप्त होते हैं। इन शिलालेखों की भाषा जहाँ सुगठित तथा प्रौढ़ है वहाँ उस पर संस्कृत का गहरा प्रभाव दिखाई देता है।

इस प्रकार यद्यपि आठवीं शताब्दी तक के शिलालेखों के आधार पर कन्नड़ में गद्य-पद्य-रचना का प्रमाण मिलता है। कन्नड़ के उपलब्ध सर्वप्रथम ग्रंथ 'कविराजमार्ग' के उपरांत कन्नड में ग्रंथनिर्माण का कार्य उत्तरोत्तर बढ़ा और भाषा निरंतर विकसित होती गई। कन्नड़ भाषा के विकासक्रम की चार अवस्थाएँ मानी गई हैं जो इस प्रकार है:

- अतिप्राचीन कन्नड़
- हळ कन्नड–प्राचीन कन्नड़
- नडु गन्नड मध्ययुगीन कन्नड़ और
- होस गन्नड–आधुनिक कन्नड

चारों द्राविड़ भाषाओं की अपनी पृथक-पृथक लिपियाँ हैं। डॉ.एम.एच. कृष्ण के अनुसार इन चारों लिपियों का विकास प्राचीन अंशकालीन ब्राह्मी लिपि की दक्षिणी शाखा से हुआ है। बनावट की दृष्टि से कन्नड़ और तेलुगु में तथा तमिल और मलयालम में साम्य है। १३वीं शताब्दी के पूर्व लिखे गए तेलुगु शिलालेखों के आधार पर यह बताया जाता है कि प्राचीन काल में तेलुगु और कन्नड की लिपियाँ एक ही थी। वर्तमान कन्नड़ की लिपि बनावट की दृष्टि से देवनागरी लिपि से भिन्न दिखाई देती हैं, किंतु दोनों के ध्वनिसमूह में अधिक अंतर नहीं है। अंतर इतना ही है कि कन्नड़ में स्वरों के अतंर्गत 'ए' और 'ओ' के ह्रस्व रूप तथा व्यंजनों के अंतर्गत वत्स्य 'ल' के साथ-साथ मूर्धन्य 'ल' वर्ण भी पाए जाते हैं। प्राचीन कन्नड़ में 'र' और 'ळ' प्रत्येक के एक-एक मूर्धन्य रूप का प्रचलन था, किंतु आधुनिक कन्नड़ में इन दोनों वर्णों का प्रयोग लुप्त हो गया है। बाकी ध्वनिसमूह संस्कृत के समान है। कन्नड़ की वर्णमाला में कुल ४७ वर्ण हैं। आजकल इनकी संख्या बावन तक बढ़ा दी गई है।

कन्नड स्वर

कन्नड़	ಅ	ಆ	ಇ	ಈ	ಉ	ಊ	ಋ	ೠ	ಎ	ಏ	ಐ	ಒ	ಓ	ಔ
हिंदी	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ह्रस्व ए	ए	ऐ	ह्रस्व ओ	ओ	औ

अनुस्वरः ಅಂ (अं), विसर्गः ಅಃ (अः)

कन्नड व्यंजन

ಕ	ಖ	ಗ	ಘ	ಙ	ಚ	ಛ	ಜ	ಝ	ಞ	ಟ	ಠ	ಡ	ಢ	ಣ	ತ	ಥ	ದ
क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द
ಧ	ನ	ಪ	ಫ	ಬ	ಭ	ಮ	ಯ	ರ	ಱ	ಲ	ವ	ಶ	ಷ	ಸ	ಹ	ಳ	ೞ
ध	न	प	फ	ब	भ	म	य	र	-	ल	व	श	ष	स	ह	ळ	-

गणतंत्र दिवस 2024

गणतंत्र दिवस पर पदाधिकारियों को संबोधित करते वरिष्ठ उप महालेखाकार श्री प्रिंसन वर्गीज

गणतंत्र दिवस पर कार्यालय पदाधिकारियों के साथ झंडा फहरातीं महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) सुश्री स्मिता गोपाल

गणतंत्र दिवस पर कार्यालय के पदाधिकारियों द्वारा बनाई गई रंगोली

कर्नाटक की महिमा

मनीषा विश्वकर्मा
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

कर्नाटक की धरती अद्भुत और न्यारी,
हर दिशा में बसी, एक अनोखी क्यारी।
यहाँ की मिट्टी में इतिहास बसा है,
प्रकृति की गोद में हर पल हँसा है।

बेलूर और हलेबिडु के मंदिरों की कला,
हर पत्थर में बसी एक दिव्य गाथा।
चेन्नाकेशव की मूर्तियाँ, बारीक नक्काशी,
देवों की कहानियाँ, पत्थरों पर लिखी।

गोकर्ण का तट, शिव के भक्तों का स्थान,
जहाँ लहरें गातीं शाश्वत गान।
कृष्णा और कावेरी, पावन नदियाँ बहतीं,
खेतों और गांवों को, जीवन देतीं।

बीजापुर की गुम्बद, गगन चूमती,
यहाँ पुराने वास्तुकला की कहानी गूंजती।
बादामी की गुफाएँ, रहस्यों से भरीं,
प्राचीन मूर्तिकला की तस्वीरें संवरतीं।

बेंगलूरु की सड़कों पर रफ्तार की दौड़,
तकनीक की दुनिया में भविष्य की होड़।
नंदन वन के बागों में फूलों की बहार,
हरियाली की चादर हर दिल से प्यार।

कूर्ग के पहाड़ और सुगंधित कॉफी के बाग,
मुस्कुराते बादलों में जैसे शांति का राग।
ऊटी और चिकमगलूर की हरी-भरी पहाड़ियाँ,
प्रकृति की सुंदरता दिल में बसाए बगियाँ।

धारवाड़ की संस्कृति साहित्य की शान,
कवियों और गायकों की गूंजती पहचान।
कन्नड़ भाषा की मिठास हर मन भाए,
इसके शब्दों में जीवन के रंग समाए।

कर्नाटक की धरती है एक अनमोल विरासत,
प्रकृति और संस्कृति की अद्भुत खासियत।
भारत का गौरव एक अनोखी पहचान,
सदियों तक चमके इसकी महानता की जान।

जिंदगी

श्री चन्द्र मणी आज़ाद
लेखाकार

हर इंसान अपने आप में,
होता है बिल्कुल पूरा।
लेकिन दूसरों को संतुष्ट करने में,
रह जाता वो हमेशा अधूरा।

अपेक्षाएँ दूसरों से रखना फिज़ूल है,
बदलाव खुद में करना ही,
सब सुखों का मूल है।
आँसू कभी जब आएँ तो,
तुम खुद ही पोंछना।
लोग आएँगे बस तोड़ने,
तुम्हारा हौसला।

न करना कोई शिकायत,
कि मुझको कुछ नहीं मिला।
मेहनत की चाबी से नसीब का,
ताला अवश्य है खुला।
ऊंचाइयों को पाकर कभी,
न होना जमीं से दूर,
अपनी जड़ो को भूलना,
ईश्वर को है नामंज़ूर।

मैं हूँ ...

श्री श्रीरंगराजन एस
सहायक लेखाधिकारी

इससे पहले कि मैं खुद को जानता,
मेरा आधा जीवन बीत गया।

परिवार में प्रवेश करने से पहले ही
मन की इच्छा मयूर बनकर नाच उठी।

खुशियों के जश्न से पहले कर्तव्य बन गए।

नीति मेरे सपने देखने से पहले,
बच्चों की इच्छाएँ महत्वपूर्ण थीं।

जीवन के अंत से पहले मैं मन के कोने में था,
फिर से झाँका और एक कविता लिखी
और अपने आप को महसूस किया। ....

खुद ही लड़ना होगा

श्री हिमांशु पटेल
लेखाकार

बढ़े हाथ अगर इज्ज़त पर तो, खुद को ही अब लड़ना होगा
स्वाभिमान के खातिर तुझको, थोड़ा हिंसक बनना होगा।

रहते हैं कुछ भेड़िये, ओढ़े शॉल समाजों में,
घर की इज्जत कांप रही है, सिसकी भरी आवाजों में।

लाज छिपाये कब तक भागें, कब तक दर्द में रहना होगा,
पहला युद्ध स्वयं से लड़ना, फिर दुष्टों से लड़ना होगा।

होते थे महायुद्ध यहाँ पर, नारियों के सम्मान में,
डूब चुकी है मर्दानी, अब जंग लगी तलवारों में।

न कोई राम बचा है, अब ना ही केशव आने वाला
तुझको दुर्गा बनना होगा, अब कोई नहीं बचाने वाला।

मरना होगा तो लड़कर मरेंगे, इस हाल में अब ना रहना होगा,
अब हम पर जिसने वार किया तो, पहले उसको मारना होगा।

मरना होगा सबसे पहले, जो देखे ओछी नज़रों से,
हम आज़ाद गगन के पंछी हैं, कैद भला क्यों पिंजरों में।

स्वतंत्रता दिवस 2024

कार्यालय के वरिष्ठ पदाधिकारियों की उपस्थिति में एजीओआरसी के सचिव श्री प्रदीप द्वारा संबोधन

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर कार्यालय में आयोजित खेल प्रतियोगिताओं के नन्हें विजेताओं को पुरस्कृत करतीं सुश्री शान्तिप्रिया एस., प्रधान महालेखाकार (ऑडिट-1) एवं सुश्री स्मिता गोपाल, महालेखाकार (ले. व ह.)

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर कार्यालय के पदाधिकारियों द्वारा बनाई गई रंगोली

सुश्री स्मिता गोपाल, महालेखाकार (ले. व ह.) एवं श्री केम्पय्याह, पूर्व सैनिक व वरिष्ठ लेखाकार द्वारा ध्वजारोहण

गलती

सुश्री शिखा गोएनका
सहायक लेखाधिकारी

वसुधा की कुछ दिनों पहले ही अंकित से शादी हुई थी। माँ-बाप की इकलौती बेटी थी। शादी में उन्होंने दिल के सारे अरमान पूरे किए थे। अंकित भी काफ़ी पढ़ा-लिखा था। घर-परिवार अच्छा था। पुश्तैनी मकान तो था ही लाखों का कारोबार भी था। और फिर वसुधा भी तो अपने माता-पिता की अकेली संतान थी। उनका सबकुछ भी तो अंकित और वसुधा का ही था।

नए परिवार, नए वातावरण को समझने, सबसे घुलने-मिलने में वसुधा को थोड़ा वक्त तो लगा पर जल्द ही उसने परिस्थितियों से तालमेल बैठा लिया। सास-ससुर भी ज़्यादा कुछ कहते नहीं थे। एक ननद थी, जिसकी शादी हो चुकी थी और दो प्यारे-प्यारे बच्चे भी थे। सिर्फ छुट्टियों में ही उनसे मिलना होता था। वसुधा की जिंदगी अब पूरी तरह बदल गई थी। आठ बजे तक सुबह सोकर उठने वाली लड़की अब नौ बजे तक सबके लिए चाय-नाश्ता और पति के लिए लंच तैयार करने लगी थी। सास-ससुर की दवाइयों, डॉक्टरों से मुलाक़ात, सभी चीज़ों का ध्यान वह रखने लगी थी।

कहते हैं कि खिली धूप में भी कभी बादल घिर ही आते हैं। वसुधा के साथ भी ऐसा ही हुआ। एक दिन अंकित घर आया तो बहुत गुस्से में था। माँ के पूछने पर बताया कि कारोबार में कुछ नुकसान हो गया है। घरवालों ने उसे समझाया कि कारोबार में नफ़ा नुकसान तो होता रहता है। इससे दुखी या गुस्सा होने पर खुद का ही नुकसान होता है। पर अंकित के दुख और गुस्से का तो मानो अंत ही नहीं था। उसने रात को खाना भी नहीं खाया और चुपचाप सोने चला गया।

यह सब वसुधा से नहीं देखा गया। वह अंकित के पास गई और उससे खाना खाने को कहने लगी। अंकित तो पहले से ही गुस्से में था, वसुधा की बातें सुनकर उसका गुस्सा सातवें आसमान पर पहुँच गया। उसने वसुधा के गाल पर एक तमाचा जड़ा और चिल्लाने लगा- “तुम खुद तो दिन भर घर में पड़ी रहती हो, कुछ काम करना तो आता नहीं। तुम्हें क्या पता जब बहुत मेहनत करने पर भी कोई चीज़ तुम्हें नहीं बल्कि तुम्हारे प्रतिद्वंदी को मिल जाए तो कैसा लगता है।” अंकित तो अपना गुस्सा निकालकर सोने चला गया पर वसुधा को कितना गहरा आघात लगा इसका उसे अहसास भी नही था। वसुधा को जीवन में कभी भी ऐसी परिस्थिति का सामना नहीं करना पड़ा था। माँ-बाप की तो लाडली थी ही, पढ़ाई और व्यवहार में अच्छी होने के कारण कभी स्कूल में डांट भी नहीं सुननी पड़ी थी। और यहाँ तो उसके गाल को ही नहीं, उसके हृदय, उसके मान-सम्मान को चोट पहुँची थी। नौकरी भी उसने इसलिए नहीं की थी क्योंकि अंकित के माता-पिता नहीं चाहते थे।

इसी व्यथा में कब रात बीत गई उसे तो पता भी नहीं चला। अगली सुबह जब अंकित को कमरे में चाय देने आई तो उसने उसे गले से लगा लिया और माफ़ी माँगने लगा। आंसूओं के साथ वसुधा के मन की पीड़ा भी बह गई और उसने अंकित को माफ़ कर दिया।

लेकिन यह तो सिर्फ़ शुरुआत थी। अब अंकित जब भी गुस्से में होता, वसुधा पर हाथ उठा देता। यहाँ तक कि एक-दो बार तो अपने माँ-बाप के सामने भी वसुधा को थप्पड़ मार चुका था। बाद में उससे माफ़ी माँग लेता, कभी गुलदस्ते दे देता या कहीं घुमाने ले जाता। यह सिलसिला यूँ ही चलता रहा। इस बीच उनका एक बेटा- 'शरद' भी पैदा हो चुका था। कभी अंकित से किसी ने कुछ कहा नहीं और वसुधा की हिम्मत नहीं हुई कि तलाक या पुलिस कंपलेंट के बारे में सोचे भी–कभी शरद के बारे में सोचकर तो कभी समाज और अपने माँ-बाप के बारे में सोचकर।

ख़ैर दिन, महीने, साल बीतते गए। वसुधा के सास-ससुर का देहांत हो चुका था। शरद जब पंद्रह साल का था तो एक सड़क दुर्घटना में अंकित की भी मौत हो चुकी थी। वसुधा ने अंकित के कारोबार की बागडोर अपने हाथ में ले ली थी। दोनों माँ-बेटे खुशहाल जिंदगी बीता रहे थे।

शरद अब पच्चीस साल का हो चुका था। कारोबार भी अब वही संभालने लगा था। कुछ समय पहले ही उसकी शादी नेहा से हुई थी। नेहा के रूप में वसुधा को तो मानो एक बेटी, एक सहेली सब कुछ मिल गया था। दोनों पूरा दिन साथ में बिताते-बातें करते, टी.वी. देखते, नई-नई खाने की रेसीपीज़ ट्राई करते।

इसी तरह कुछ महीने बीत गए। एक शाम शरद और नेहा के कमरे से जोर-जोर से आवाज़ें आ रही थीं। वसुधा घबराकर गई तो नज़ारा देखकर उसके पैरों के नीचे की ज़मीन ही निकल गई। शरद ने नेहा को थप्पड़ मारा था। वसुधा तो यह देखकर सन्न ही रह गई।

आज उसे यह अहसास हो रहा था कि उसने कितनी बड़ी गलती कर दी है। उसने कभी भी अंकित का विरोध नहीं किया, कोई ठोस कदम नहीं उठाया। आज शरद को अपनी पत्नी के साथ ऐसा व्यवहार करना बिल्कुल भी गलत नहीं लगा क्योंकि उसने अपने माता-पिता को यही करते देखा था। आज वसुधा को अहसास हुआ कि गलती करने वाले से बड़ा गुनहगार गलती सहने वाला होता है।

राजभाषा वार्षिक कार्यक्रम 2024-25

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2024-25 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 100% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4.ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 90% के राज्य/संघ राज्यक्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 55% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुलअनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10.	हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में काम करने की सुविधायुक्त इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों जिनमें कंप्यूटर भी शामिल है, की खरीद	100%	100%	100%

11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्ड आदि द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किए जाएं ।	100%	100%	100%
13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें			
	(क) हिंदी सलाहकार समिति	वर्ष में 2 बैठकें		
	(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 2बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)		
	(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/ उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों ।	40%	30%	20%
		(न्यूनतम अनुभाग) सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, "क" क्षेत्र में कुल कार्य का 40%, "ख" क्षेत्र में 25% और "ग" क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए ।		

राजभाषा संबंधी संवैधानिक प्रावधान

संघ की राजभाषा नीति द्विभाषिकता की है अर्थात् इसमें संघ के सरकारी काम काज के लिए हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं के प्रयोग का प्रावधान है। संविधान के **भाग-17** में राजभाषा संबंधी उपबंध दिए गए हैं जिनमें **अनुच्छेद-343 से 351 तक** 9 अनुच्छेद राजभाषा से संबंधित हैं जिनमें हिंदी की संवैधानिक स्थिति स्पष्ट हो जाती है।

संविधान के **अनुच्छेद 343 (1)** के अनुसार देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी संघ की राजभाषा होगी तथा संघ में सरकारी प्रयोजनों के लिए भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय रूप प्रयोग होगा।

अनुच्छेद-343 (2) के अनुसार संविधान लागू होने से 15 वर्ष तक यानी 26 जनवरी, 1965 तक हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी का प्रयोग भी होता रहेगा।

अनुच्छेद 343 (3) के अनुसार संसद इस अवधि को आगे भी बढ़ा सकती है।

अनुच्छेद-344 (1) संविधान के लागू होने के 5 साल बाद 1955 में प्रथम राजभाषा आयोग के गठन की व्यवस्था की गई।

अनुच्छेद-344 (2) के अनुसार यह आयोग अन्य बातों के साथ-साथ सरकारी काम काज में हिंदी के क्रमिक प्रयोग के बारे में राष्ट्रपति को अपनी सिफारिशें प्रस्तुत करेगा।

अनुच्छेद-344 (3) के अनुसार आयोग की सिफारिश पर राय देने के लिए संसदीय राजभाषा समिति का गठन किया गया इस समिति की सिफारिश के आधार पर ही संसद द्वारा अनुच्छेद-343 की प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग कर राजभाषा अधिनियम 1963 बनाया गया।

अनुच्छेद-345 के अनुसार राज्यों को यह अधिकार है कि वे अपने यहां प्रयुक्त किसी एक भाषा या एक से अधिक भाषाओं को अपनी राजभाषा चुन सकते हैं या चाहे तो अंग्रेजी का प्रयोग जारी रख सकते हैं ।

अनुच्छेद-345 पर ध्यान दिया जाए तो यह स्पष्ट होता है कि राज्यों को अपनी राजभाषा का प्रयोग प्राधिकृत करने के लिए केंद्र की भांति 15 सालों तक प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं थी वे अपनी सुविधा अनुसार किसी भी समय अंग्रेजी की जगह सभी कार्यों के लिए किसी भी भाषा को अपनी राजभाषा या राजभाषाएं अपनाने के लिए स्वतंत्र थे।

अनुच्छेद-346 में संघ और राज्यों के बीच पत्राचार के माध्यम की व्यवस्था की गई और कहा गया कि जो भाषा संघ के सरकारी कामकाज में प्रयोग के लिए इस समय प्राधिकृत है वही संघ और राज्यों के बीच पत्राचार के लिए प्रयुक्त की जाएगी।

अनुच्छेद-347 में राष्ट्रपति राज्य की मांग के आधार पर किसी भी भाषा को सरकारी कामकाज के लिए मान्यता दे सकते हैं।

अनुच्छेद-348 खंड (1) में यह प्रावधान किया गया है कि जब तक संसद कोई दूसरा कानून नहीं बनाती तब तक उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालय की सभी कार्यवाहियां अंग्रेजी में होगी।
अनुच्छेद-348 के खंड (2) के अनुसार किसी राज्य का राज्यपाल राष्ट्रपति की पूर्वानुमति से अपने राज्य के उच्च न्यायालय के निर्णयों, आदेशों आदि को छोड़कर बाकी सभी कार्रवाइयों के लिए हिंदी या राज्य की राजभाषा का प्रयोग प्राधिकृत कर सकता है।

अनुच्छेद-349 में यह कहा गया है कि 348 (1) में उल्लिखित भाषा की व्यवस्था में परिवर्तन के लिए यदि 1965 के पहले कानून बनाया जाता है तो उसके लिए राष्ट्रपति की अनुमति प्राप्त करनी अनिवार्य होगी।

अनुच्छेद-350 के अनुसार भारत के प्रत्येक नागरिक को यह अधिकार है कि वह अपनी व्यथा के निवारण के संबंध में अपना आवेदन या अभ्यावेदन सरकारी पदाधिकारी के सामने किसी भी भाषा में प्रस्तुत कर सकता है।
अनुच्छेद-350 (क) तथा 350 (ख) के द्वारा भाषाई अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा के लिए यह व्यवस्था की गई है।

हिंदी भाषा के विकास के लिए निर्देश - 351वें अनुच्छेद में हिंदी के विकास के विषय में संघ सरकार को निम्नलिखित निर्देश दिए गए हैं-

हिंदी भाषा की प्रसार-वृद्धि और उसका विकास करना ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। भाषा की आत्मीयता में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्तानी और अष्टम अनुसूची में उल्लिखित अन्य भारतीय भाषाओं की रूप, शैली और पदावली को आत्मसात करते हुए उसके शब्द भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत तथा गौणतः उल्लिखित भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करना संघ का कर्तव्य होगा।

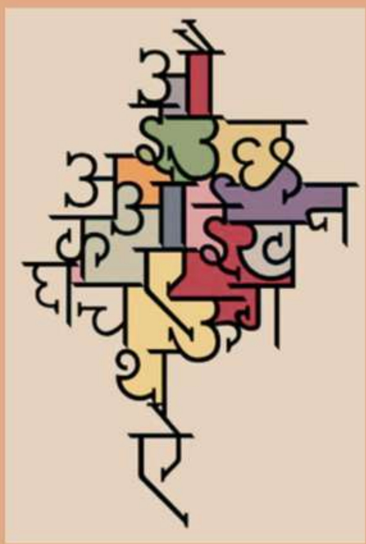

मानक हिंदी वर्णमाला

श्री उदय प्रताप सिंह
सहायक निदेशक (राजभाषा)

सामान्यता यह देखा गया है कि साधारण लोग ही नहीं बल्कि शिक्षित लोग भी मानक हिंदी वर्णमाला से पूरी तरह से परिचित नहीं हैं। हिंदी हमारी राजभाषा है, हमें मानक हिंदी वर्णमाला का ज्ञान होना आवश्यक है। पाठकों की सुविधा के लिए यहाँ मानक हिंदी वर्णमाला दी गई है। आशा है कि पाठक इससे अवश्य लाभान्वित होंगे।

मानक हिंदी वर्णमाला में कुल 52 वर्ण हैं, जिनमें से 13 स्वर हैं और 35 व्यंजन तथा 4 संयुक्त व्यंजन हैं। मानक हिंदी वर्णमाला का स्वरूप निम्नलिखित है-

1. स्वरः अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ अं अः

2. व्यंजनः

क ख ग घ ङ.	कंठ्य
च छ ज झ ञ	तालव्य
ट ठ ड ढ(ड़ ढ़) ण	मूर्धन्य
त थ द ध न	दंत्य
प फ ब भ म	ओष्ठ्य
य र ल व	अतस्थ
श ष स ह	ऊष्म

3. संयुक्त व्यंजन- क्ष (क् + ष), त्र (त् + र), ज्ञ (ज् + ञ), श्र (श् + र)
4. अनुस्वार- अं
5. विसर्ग- अः
6. अनुनासिक चिह्न (चंद्रबिंदु)- अँ
7. आगत ध्वनियाँ- ऑ ख़ ग़ ज़ फ़

कार्यालय में आयोजित मेडिकल कैम्प

दिनांक 27.06.2024 गुरुवार सुबह 10.30 बजे से शाम 04:30 बजे तक क्लब हॉल में लायंस ब्लड सेंटर, विजयनगर के सहयोग से चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया जिसमें सभी पदाधिकारियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। मेडिकल कैम्प में आँखों की जांच, ब्लड प्रेशर की जांच, एक्यूपंचर इत्यादि के साथ रक्तदान का भी शिविर लगाया गया था। पदाधिकारियों द्वारा इन सभी सेवाओं का उत्साहपूर्वक उपयोग किया गया।

सेवानिवृत्त पदाधिकारी
(अप्रैल - सितंबर 2024)

क्रम सं.	नाम (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम	सेवानिवृत्ति दिनांक
01.	धर्णप्पा नाइक	वरिष्ठ लेखाधिकारी	30.04.2024
02.	त्रिवेणी एस	वरिष्ठ लेखाधिकारी	30.04.2024
03.	गायत्री एन जी	सहायक लेखाधिकारी	30.04.2024
04.	लता पी	पर्यवेक्षक	30.04.2024
05	रवि ए	सहायक पर्यवेक्षक	30.04.2024
06	कविता	आशुलिपिक ग्रेड 1	30.04.2024
07.	उषा थॉमस	वरिष्ठ लेखाधिकारी	31.05.2024
08.	यतिश बी पी	वरिष्ठ लेखाधिकारी	31.05.2024
09.	उदयशंकर एम यू	पर्यवेक्षक	31.05.2024
10.	गुबेंद्र कुमार ई	सहायक पर्यवेक्षक	31.05.2024
11.	अजित कुमार पी	वरिष्ठ लेखाकार	31.05.2024
12.	संजीवय्याह के जी	वरिष्ठ लेखाकार	31.05.2024
13.	लक्षमम्मा	एमटीएस	31.05.2024
14.	शारदा टी	सहायक लेखाधिकारी	30.06.2024
15.	छाया बी एन	सहायक लेखाधिकारी	30.06.2024
16.	टी बी अशोक	सहायक लेखाधिकारी	30.06.2024
17.	विजय सुनन्दा एम	सहायक लेखाधिकारी	31.07.2024
18.	ललिता सुधाकर	सहायक लेखाधिकारी	31.08.2024
19.	युवराज एस	एमटीएस	31.08.2024
20.	जयम्मा	एमटीएस	31.08.2024
21.	गायत्री के	सहायक लेखाधिकारी	30.09.2024
22.	जो एम ऐस्टिब्रो	पर्यवेक्षक	30.09.2024

लेखा और लेखापरीक्षा संबंधी शब्दावली

01. Account Circle	लेखा परिमंडल
02. Account Code	लेखा संहिता
03. Account Procedure	लेखा प्रक्रिया
04. Acquittance Roll	वेतन चिट्ठा, निस्तारण पत्र
05. Audit Instruction	लेखा परीक्षा अनुदेश, संपरीक्षा अनुदेश
06. Amenities	सुविधाएं
07. Balance Closing	अंत शेष, इति शेष
08. Balance Opening	आदि शेष, आरंभिक शेष
09. Contributory Provident Fund	अंशदायी भविष्य निधि
10. Disbursement	संवितरण
11. Embezzlement	गबन
12. Emoluments	परिलब्धियां
13. Imprest	अग्रदाय
14. Indent	मांग-पत्र
15. Major Head	मुख्य शीर्ष
16. Minor Head	लघु शीर्ष
17. Mortgage	बंधक/ गिरवी
18. Recoupment	आपूर्ति
19. Rectification	परिशोधन
20. Superannuation	अधिवार्षिकी/ अधिवर्षिता
21. Utilisation Certificate	उपयोग प्रमाण पत्र
22. Comptroller and Auditor General Of India	भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
23. Accountant General	महालेखाकार
24. Additional Accountant General	अपर महालेखाकार
25. Senior Accounts Officer	वरिष्ठ लेखाधिकारी
26. Auditor	लेखापरीक्षक

कार्यालय में प्रयुक्त होने वाले सामान्य वाक्यांश

01. अनुमोदन के लिए प्रस्तुत।	Submitted for approval.
02. अवलोकन के लिए प्रस्तुत।	Submitted for perusal.
03. आदेश के लिए प्रस्तुत।	Submitted for orders
04. यथा प्रस्तावित कार्रवाई की जाए।	Action may be taken as proposed
05. देखकर वापस की गई।	Seen and returned
06. आदेश को जारी किया जाए।	Orders may be issued
07. कृपया मंजूरी प्रदान करें।	Kindly accord sanction
08. इसके साथ संलग्न।	Herewith enclosed
09. मसौदा अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है।	Draft put up for approval
10. अदायगी के लिए पारित किया गया।	Passed for payment
11. ... को सूचना देते हुए।	Under intimation to...
12. परिचालित करके फ़ाईल करें।	Circulate and file
13. चर्चा करें।	Please discuss
14. मंजूर है।	Sanctioned
15. तुरंत प्रस्तुत करें।	Put up immediately.
16. सहमति प्राप्त करें।	Concurrence may be obtained
17. हमें आगे और कुछ नहीं कहना है।	We have no further comments.
18. मार्गदर्शन हेतु नोट किया गया।	Noted for guidance
19. जांच की और सही पाया।	Checked and found correct
20. आवश्यक कारवाई करें।	Do the needful
21. स्पष्टीकरण मांगा जाए।	Explanation may be called for.
22. जांच का आदेश दे दिया गया है।	Enquiry has been ordered
23. कृपया उत्तर दें।	Kindly reply

कार्यालय के पदाधिकारियों की रचनात्मकता

वरिष्ठ लेखाधिकारी श्रीमती आर जयम्मा द्वारा कैमरे में कैद की गई मनमोहक तस्वीर

सकलेशपुर घाटी में सूर्यास्त

लेखाकार सिद्धार्थ वर्मा की चित्रकारी

हॉकी मैसूर इन्विटेशन कप-2024
पुरुष हॉकी टूर्नामेंट

चार दिवसीय हॉकी मैसूर इन्विटेशन कप-2024 पुरुष हॉकी टूर्नामेंट में शीर्ष 5 जिले (धारवाड़, हासन, रायचूर, बेलगावी और बल्लारी) टीमों और शीर्ष 5 संस्थागत टीमों (एजीओआरसी, कस्टम्स, डीवाईईएस, एमईजी बॉयज और दक्षिण पश्चिम रेलवे) सहित कुल 12 टीमों ने भाग लिया।

फाइनल मैच में डीवाईईएस, बेंगलुरु और एजीओआरसी, बेंगलुरु के बीच कड़ी टक्कर देखने को मिली, जिसमें दोनों में से किसी ने भी अपने प्रतिद्वंद्वियों को गोल करने का मौका नहीं दिया, हालांकि, डीवाईईएस, बेंगलुरु के बिपिन, एजीओआरसी की मजबूत रक्षा को भेदने में सफल रहे और मैच का एकमात्र गोल किया।

उपविजेता एजीओआरसी, बेंगलूरु को नकद पुरस्कार मिला और मोहम्मद नईम को सर्वश्रेष्ठ फॉरवर्ड के रूप में सम्मानित किया गया।

सभी पदाधिकारियों को बधाई।

श्रद्धांजलि

श्री उमाशंकर के वी
सहायक पर्यवेक्षक

जन्म तिथि : 27.05.1968
नियुक्ति तिथि: 19.01.1995
दिवंगत तिथि: 17.09.2024

श्री कोरगप्पा एच एस
सहायक पर्यवेक्षक

जन्म तिथि : 07.01.1969
नियुक्ति तिथि: 18.01.1993
दिवंगत तिथि: 18.07.2024

मृत्यु सत्य है और शरीर नश्वर है
तथापि अपनों से बिछड़ने का दुःख होता है,
ईश्वर से प्रार्थना करते है कि
दिवंगत आत्माओं को अपने श्रीचरणों में स्थान दें।

कर्नाटक राज्य पर प्रश्नोत्तरी

1. **कर्नाटक की राजधानी क्या है?**
(क) मैसूर (ख) बेंगलूरु (ग) मैंगलोर (घ) हम्पी

2. **कौन सी नदी बेंगलूरु शहर से होकर बहती है?**
(क) कृष्ण (ख) गोदावरी (ग) कावेरी
(घ)तुंगभद्रा

3. **कर्नाटक का वह कौन सा प्रसिद्ध त्योहार है जो अपनी भव्यता और सांस्कृतिक महत्व के लिए जाना जाता है?**
(क) दिवाली (ख) दशहरा (ग) होली (घ) ईद

4. **कर्नाटक में स्थित किस प्राचीन खंडहरों और मंदिरों के लिए प्रसिद्ध स्थल को यूनेस्को विश्व धरोहर का खिताब दिया गया है?**
(क) बृहदेश्वर मंदिर
(ख) खजुराहो स्मारक समूह
(ग) हम्पी
(घ) कोणार्क सूर्य मंदिर

5. **कर्नाटक का कौन सा हिल स्टेशन अपनी प्राकृतिक सुंदरता और कॉफी बागानों के लिए लोकप्रिय है?**
(क) ऊटी
(ख) कूर्ग
(ग) कोडाईकनाल
(घ) महाबलेश्वर

6. **कर्नाटक में महिलाओं द्वारा पहना जाने वाला पारंपरिक परिधान क्या है?**
(क) साड़ी
(ख) लहंगा चोली
(ग) सलवार कमीज
(घ) धोती

7. **निम्न में से किस नृत्य शैली की उत्पत्ति कर्नाटक में हुई जिसमें सुंदर चाल और जटिल हाव-भाव की प्रधानता पाई जाती है?**
(क) भरतनाट्यम
(ख) कथकली
(ग) कुचिपुड़ी
(घ) यक्षगान

8. **कर्नाटक में किस व्यंजन को खमीर उठे चावल और दाल के घोल से बनाया जाता है जिसका नाश्ते के रूप में सेवन किया जाता है?**
(क) इडली
(ख) समोसा
(ग) वड़ा पाव
(घ) डोसा

9. **निम्न में से किस शहर को "महलों का शहर" कहा जाता है?**
(क) मैसूर
(ख) हम्पी
(ग) बीजापुर
(घ) बेलूर

10. **कर्नाटक स्थित कौन सा अभयारण्य एशियाई हाथियों के लिए प्रसिद्ध है?**
(क) बांदीपुर राष्ट्रीय उद्यान
(ख) रंगनाथिटु पक्षी अभयारण्य
(ग) बन्नेरघट्टा जैविक उद्यान
(घ) नागरहोल राष्ट्रीय उद्यान

उत्तर:

1.ख 2.ग 3.ख 4.ग 5. ख
6.क 7.घ 8.घ 9.क 10.क.

संदर्भ सूची

कर्नाटक के लोक नृत्य
https://en.wikipedia.org/wiki/Folk_arts_of_Karnataka
https://www.nationalgeographic.com/travel/article/finding-indias-lost-musicians?utm_source=Twitter&utm_medium=Social&utm_content=link_tw20161210travel-indiamusic&utm_campaign=Content&sf45735326=1 - दोल्लू कुनिथा
https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Pooja_Kunitha.jpg - पूजा कुनिथा
https://www.samedaytours.in/blog/scintillating-folk-dance-of-karnataka/

कर्नाटक के प्रसिद्ध मंदिर
https://www.karnatakatourism.org/temples-in-karnataka/page/3/

कर्नाटक: भोजन एवं परिधान
https://infinitylearn.com/surge/social-science/culture-of-karnataka/
https://www.deccanherald.com/content/564674/food-state.html
https://www.caleidoscope.in/art-culture/traditional-dresses-of-karnataka-reflecting-the-beauty-of-kannada-culture

कर्नाटक का समृद्ध इतिहास
https://www.karnataka.gov.in/info-1/History/History/en
https://www.britannica.com/place/Karnataka-state-India
https://en.wikipedia.org/wiki/Timeline_of_Karnataka

कर्नाटक में अध्ययन
https://en.wikipedia.org/wiki/Indian_Institute_of_Management_Bangalore
https://en.wikipedia.org/wiki/Indian_Institute_of_Science
https://nimhans.co.in/
https://bmcribengaluru.karnataka.gov.in/english
https://www.nid.edu/about/campuses/bengaluru-campus
https://en.wikipedia.org/wiki/National_Law_School_of_India_University
https://www.ncbs.res.in/

कन्नड़ भाषा
https://en.wikipedia.org/wiki/Kannada

आवरण पृष्ठ
https://www.thomascook.in/blog/india-holidays/waterfalls-in-karnataka/ - जोग फ़ॉल्स
https://in.pinterest.com/pin/384283780720441128/ - कूर्ग
https://www.flickr.com/photos/jaynug/19291192794/in/dateposted-public/ - मैसूर पैलेस

अंतिम पृष्ठ
कारवार में सूर्यास्त, साभार श्रीरंगराजन, सहायक लेखाधिकारी

देखो हँस न देना

टीचर- द्वितीय विश्व युद्ध कब शुरू और कब खत्म हुआ?
गोलू- पृष्ठ संख्या 26 से शुरू हुआ और 29 पर खत्म हो गया।

आकृति – राजा ने सीधी रेखा क्यों खींची?
चिंटू – क्योंकि वह रूलर है।

सुनील : क्या तुम लेडीफिंगर खाते हो?
राकेश : नहीं किसी की फिंगर खाना गलत बात है।

पप्पू : जो ट्रेन बबलगम ढोकर ले जाती है, उसे क्या कहते हैं?
बंटी: चिउ चिउ ट्रेन

मास्टर जी – तुम्हारे जीवन का क्या लक्ष्य है, बताओ?
चिंटू – मैं सूरज पर कदम रखने वाला पहला व्यक्ति बनूँगा।
मास्टर जी – वो तुम नहीं बन सकते, तुम जल जाओगे।
चिंटू – मैं सूरज पर रात में जाऊंगा।

जज (चोर से)- तुम्हें शर्म नहीं आती , शर्मा जी के यहाँ बार-बार चोरी करने घुस जाते हो?
चोर- जज साहब, इसमें मेरा क्या कसूर है, उनके दरवाजे पर लिखा है " आपके पुनः पधारने पर आपका स्वागत है" मैं तो स्वागत के लिए घुसा था।

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय
पार्क हाउस रोड
बेंगलूरू, कर्नाटक
560001

https://cag.gov.in/ae/karnataka/en

चित्र : कर्नाटक के कारवार में सूर्यास्त